संस्थापित सन् 1932

76वां वार्षिक समारोह

श्री सीताराम धर्ममण्डल

सराय हरखू, जौनपुर

मुक्तक जयन्ती समारोह

16 अक्टूबर,
से
22 अक्टूबर,

स्मारिका - 2007

प्रकाशक
श्री सीताराम धर्ममण्डल सराय हरखू, जौनपुर

मण्डल के अमर रत्न
श्री मनमोहन शंकर श्रीवास्तव

राम की सीता राम ही जाने और न जाने कोय।
ईश्वर कहां, किसको उठा ले समझ न पाये कोय।।

श्री मनमोहन शंकर श्रीवास्तव की गणना श्री सीताराम धर्म मण्डल सराय हरखू, जौनपुर के सर्वाधिक कर्मठ एवं समर्पित सदस्य के रूप में की जाती रहेगी। आप पिछले 65 वर्षों से लगातार मण्डल से जुड़े रहे एवं अभिनय तथा कार्यकारिणी में सक्रिय भागीदारी की। आपने 1942 में पहली बार अग्नि के पात्र का अभिनय किया एवं इसके पश्चात सीता विभीषण, दशरथ इत्यादि का अभिनय किया, किन्तु आपके द्वारा अभिनीत राम का पातृत्व इतना अविस्मरणीय माना जाता है कि प्रायः लोग आपको मण्डल के राम के रूप में ही जानने लगे। साथ ही श्री मनमोहन शंकर ने मण्डल की कार्यकारिणी के भी महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया, जिसके अन्तर्गत वर्ष 1997 से 1999 तक एवं वर्ष 2001 से 2003 तक अध्यक्ष के पद पर रहे तथा इसके पूर्व आपने मण्डल के निर्देशक के दायित्व का भी निर्वहन किया।

श्री मनमोहन शंकर मण्डल की मुक्तक जयन्ती के प्रति उत्कट आशान्वित रहे एवं प्रबल इच्छाशक्ति के रूप में प्रेरित करते रहे, किन्तु आपके अकस्मात निधन के पश्चात मण्डल के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं का मनोबल इस सीमा तक टूटा कि मुक्तक जयन्ती समारोह के आयोजन पर भी प्रश्नचिन्ह लग गया। आपके निधन के समय मुक्तक जयन्ती के आयोजन के लिए एक माह से भी कम समय शेष रह गया था। इस कारण स्मारिका के प्रकाशन इत्यादि गतिविधियों को भी स्थगित करने की भी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। किन्तु आपके प्रबल इच्छाशक्ति एवं प्रेरणा को ध्यान में रखते हुए आधे–अधूरे मन से कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने का प्रयास किया जा रहा है एवं इस वर्ष मण्डल की समस्त गतिविधियों को आपको ही समर्पित किया जा रहा है।

ईश्वर मण्डल के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं को इतनी शक्ति दे कि हम सब इस विषम परिस्थिति का सामना कर सकें। आपकी आत्मा को शान्ति दे।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्री सीताराम धर्म मण्डल
सराय हरखू, जौनपुर।

संस्थापित – सन् 1932

76वां वार्षिक समारोह

श्री सीताराम धर्म मण्डल
सराय हरखू, जौनपुर

मुक्तक जयन्ती समारोह

दिनांक 16 अक्टूबर से 22 अक्टूबर, 2007

स्मारिका-2007

प्रकाशक :
श्री सीताराम धर्ममण्डल, सराय हरखू,
जौनपुर

ई–मेल : dharmmandal.com, dharmmandal@gmail.com

वर्ष 1991 से मण्डल के अध्यक्ष, मंत्री एवं निर्देशक

वर्ष	अध्यक्ष	मंत्री	निर्देशक
1991	श्री ज्ञानेन्द्र सिन्हा	श्री के0पी0 श्रीवास्तव	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
1992	श्री ज्ञानेन्द्र सिन्हा	श्री के0पी0 श्रीवास्तव	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
1993	श्री ज्ञानेन्द्र सिन्हा	श्री कृष्ण कुमार सिन्हा	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
1994	श्री विमल कृष्ण श्रीवास्तव	श्री कृष्ण कुमार सिन्हा	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
1995	श्री विमल कृष्ण श्रीवास्तव	श्री कृष्ण कुमार सिन्हा	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
1996	श्री विमल कृष्ण श्रीवास्तव	श्री कौशल कुमार सिन्हा	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
1997	श्री मदन मोहन शंकर	श्री कृष्ण कुमार सिन्हा	श्री श्यामजी सिन्हा
1998	श्री मदन मोहन शंकर	श्री कृष्ण कुमार सिन्हा	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
1999	श्री मदन मोहन शंकर	श्री के0पी0 श्रीवास्तव	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
2000	श्री विमल कृष्ण श्रीवास्तव	श्री के0पी0 श्रीवास्तव	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
2001	श्री मदन मोहन शंकर	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	श्री कृष्ण कुमार सिन्हा
2002	श्री मदन मोहन शंकर	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	श्री सतीश चन्द्र श्रीवास्तव
2003	श्री मदन मोहन शंकर	श्री अरुणकुमार श्रीवास्तव	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
2004	श्री के0पी0 श्रीवास्तव	श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
2005	श्री के0पी0 श्रीवास्तव	श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव	श्री कृष्ण कुमार सिन्हा
2006	श्री के0पी0 श्रीवास्तव	श्री कौशल कुमार सिन्हा	श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

जगदीश नारायण राय
मंत्री
वस्त्रोद्योग एवं रेशम उद्योग

सं० : 523/सामान्य/सं०/वस्त्रो० एवं रे०उ०/2007
दूरभाष : 0522-2238067 कार्यालय
सी.एच.–3308
2236509 आवास
81 बी–82, विधान भवन,
लखनऊ

दिनांक : 20.7.07

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्री सीताराम धर्म–मण्डल, सराय हरखू, जौनपुर द्वारा विजय दशमी के पावन पर्व पर आयोजित विविध धार्मिक कार्यक्रमों की ७६वीं वर्षगाठ को मुक्तक जयन्ती के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर संस्था द्वारा एक स्मारिका का भी प्रकाश किया जा रहा है।

धर्म हमारे राष्ट्र की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का आधार रहा है। भगवान राम का पावन चरित्र मानवता का एक आदर्श है, जो हमें प्रेम दय तथा सद्भावना का उपदेश देकर हमें एक धर्मनिष्ठा तथा चरित्रवान मानव बनाने की प्रेरणा देता है।

धर्म मण्डल द्वारा हर वर्ष धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन लोगों में सामाजिक और सांस्कृतिक जागृति लाने की दिशा में एक सराहनीय कदम है। मुक्तक जयन्ती के सफल आयोजन एवं स्मारिका के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

20–07–2007
(जगदीश नारायण राय)
मंत्री
वस्त्रोद्योग एवं रेशम उद्योग
उत्तर प्रदेश

कल्याण सिंह
सांसद (लोक सभा)
सभापति
ग्रामीण विकास संबंधी स्थायी समिति

115, संसदीय सौध,
नई दिल्ली–110 001
दूरभाष : 23034973 (कार्या.)
23013582 (कार्या.)
23782291 (निवास)
टेली फैक्स : 23013582

दिनांक 08 अगस्त, 2007

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री सीताराम धर्म मण्डल सराय हरखू, जौनपुर द्वारा विजय दशमी के पावन पर्व पर आयोजित विविध धार्मिक कार्यक्रमों की 76वीं वर्षगांठ को मुक्तक जयन्ती के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर संस्था द्वारा एक स्मारिका का भी प्रकाश किया जा रहा है।

धर्म हमारे राष्ट्र की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का आधार रहा है। भगवान राम का पावन चरित्र मानवता का एक आदर्श है, जो हमें प्रेम दय तथा सद्भावना का उपदेश देकर हमें एक धर्मनिष्ठा तथा चरित्रवान मानव बनाने की प्रेरणा देता है।

धर्म मण्डल द्वारा हर वर्ष धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन लोगों में सामाजिक और सांस्कृतिक जागृति लाने की दिशा में एक सराहनीय कदम है। मुक्तक जयन्ती के सफल आयोजन एवं स्मारिका के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीय,

(कल्याण सिंह)
सांसद एवं पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

श्रीराम यादव
आई.ए.एस. (से.नि.)
अध्यक्ष / पीठासीन अधिकारी

औद्योगिक न्यायाधिकरण (प्रथम)
7- स्ट्रैची रोड, इलाहाबाद, उ० प्र०
फोन नं० (कार्या०) : 0532-2604213
(आवास) 0532-2466580
मोबाइल 9451847632

शुभ कामना सन्देश

यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि श्री सीताराम धर्म मण्डल, सराय हरखू, जौनपुर, उ०प्र०, अपने यशस्वी 75 वर्ष पूर्ण करके 76वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है, जिसके उपलक्ष्य में मुक्तक जयन्ती समारोह का आयोजन प्रस्तावित है और इसी परिप्रेक्ष्य में एक स्मारिका निकाली जानी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्मारिका के माध्यम से भगवान श्रीराम के जीवन चरित्र और मानवीय समस्याओं के सम्बन्ध में उनके द्वारा प्रयासों का व्यापक प्रचार और प्रसार होगा, जिससे आज के समस्याग्रस्त समाज को राहत मिलेगी।

मैं इस स्मारिका के पूर्ण सफलता की ईश्वर से कामना करता हूँ।

(श्रीराम यादव)
आई०ए०एस० 'से०नि०'

सेवा में,
श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव,
निदेशक,
श्री सीताराम धर्म मण्डल,
ग्राम व पोस्ट–सराय हरखू,
जौनपुर, उ०प्र०।

सम्पादकीय.....

श्री सीताराम धर्ममण्डल, सराय हरखू, जौनपुर के मुक्तक जयन्ती समारोह के अवसर पर प्रस्तुत 'स्मारिका' का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। स्मारिका का जो स्वरूप हमारे मनोमस्तिष्क में था उसे समयाभाव तथा अन्य आकस्मिक घटनाओं के कारण हमें देने में असमर्थ हो गये हैं। सच पूछा जाय तो हम जो कुछ प्रकाशित करने में सक्षम हुये हैं वह प्रकाशन हेतु उपलब्ध सामग्री का न्यून अंश ही है। अपने मण्डल की स्थापित परम्परा है कि इसके सदस्य जो कुछ भी कार्य करते हैं उसको मण्डल की प्रेरणा समझ कर ही करते हैं। प्रस्तुत स्मारिका का वर्तमान स्वरूप भी मण्डल की प्रेरणा का परिणाम है। सब कुछ मण्डल की कृपा है।

यहाँ पर हमें अपने मण्डल के उन समस्त धर्म परायण एवं प्रतिभाशाली सदस्यों से क्षमा याचना अवश्य करनी है, जिन्होंने बहुत थोड़े समय में ही प्रकाशन हेतु अपने सुन्दर लेख हमारे पास प्रेषित किये हैं किन्तु जिन्हें हम अपनी विवशता एवं असमर्थता के कारण प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं। इस सन्दर्भ में हमें यह भी निवेदन करना है कि हमारे दिवंगत एवं वर्तमान सदस्यों के बारे में बहुत कुछ आवश्यक तथ्य तथा सूचनाएँ हम समयाभाव के कारण प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं। इसके लिए भी हम क्षमा प्रार्थी हैं।

बहुत कम समय में प्रस्तुत स्मारिका के प्रकाशन हेतु तथ्यों का संग्रह करने तथा उन्हें आवश्यक स्वरूप प्रदान करने में हमारी संस्था की कार्यकारिणी के कर्मठ सदस्यों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम उन सबके आभारी हैं। हमें प्रदेश मंत्रिमण्डल के माननीय मंत्रियों एवं गणमान्य महानुभावों का शुभ सन्देश भी प्राप्त हुआ है जिसके लिए हम हृदय से अपना आभार प्रकट करते हैं।

अन्त में, हम अपने सहयोगियों, मुक्तक जयन्ती समारोह समिति के सदस्यों का आभारी हैं, जिन्होंने कठिन परिश्रम करके स्मारिका प्रकाशन को सम्भव बनाया है।

हम श्री प्रदीप कुमार सक्सेना, शुभम् आर्ट्स तथा श्री सन्दीप दीक्षित जी के अत्यन्त आभारी हैं जिनके अथक प्रयास एवं सहयोग से अल्पसमय में स्मारिका का मुद्रण सम्भव हो सका है।

प्रकाशक समिति,
संयोजक,
श्री सीताराम धर्ममण्डल,

अध्यक्षीय

हमें गर्व का अनुभव हो रहा है कि जिस संस्था का बीजा-रोपण हमारे पूर्वजों द्वारा आज से 76 वर्ष पूर्व सन् 1932 में किया गया था, अब एक फलदायी पूर्ण वृक्ष के रूप में हमारे सामने अडिग और अमर खडा हुआ है। इस वर्ष 2007 में हम धूमधाम से मुक्तक जयन्ती समारोह का आयोजन कर रहे हैं। हमें आशा है यह आयोजन परस्पर सहयोग एवं परिश्रम से यादगार बनेगा। मुक्तक जयन्ती समारोह का आयोजन गत वर्ष में ही किया जाना था किन्तु कुछ विषम एवं दुखदायी घटनाओं के कारण इसे इस वर्ष के लिये स्थगित करना पडा। मुक्तक जयन्ती समारोह के अवसर पर धर्म मण्डल द्वारा एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है। इसमें आप विविध रोचक सामग्री के साथ दिवंगत विभूतियों के मण्डल के प्रति उनके योगदान से भी परिचित हो सकेंगे। मण्डल हमारा परिवार है और परिवार का हर सदस्य मण्डल के उन्नयन के लिये समर्पित होता है। आज जबकि पाश्चात्य भौंडी, फूहड और अश्लील संस्कृत समाज में अपने पांव-पसार कर दूषित करने का प्रयास कर रही है, वहीं पर हम पांच दिन मानस प्रदर्शन कर जनमानस में धार्मिक विचारों और सुसंस्कारों का संचार कराते है।

अन्त में हम ग्रामवासियों, दर्शकों, मण्डल के कर्मठ एवं उत्साही सदस्यों एवं समारोह में प्रतिभागी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते है जिनके सहयोग से यह कठिन अनुष्ठान पूर्णता की ओर अग्रसर है। व

– के०पी० श्रीवास्तव
अध्यक्ष

मण्डल का विकास पत्र

श्री सीताराम धर्म मण्डल सराय हरखू, जौनपुर की स्थापना 75 वर्ष पूर्व 1932 में की गई थी एवं निश्चित रूप से उस समय किसी के भी मन में मुक्तक जयन्ती के आयोजन का विचार भी नहीं आया होगा, किन्तु यह हर्ष का विषय है कि वर्ष 1981 में स्वर्ण जयन्ती एवं 1992 में हीरक जयन्ती समारोह के आयोजन के पश्चात् वर्ष 2007 में मण्डल अपना मुक्तक जयन्ती समारोह का आयोजित कर रहा है।

इस सन्दर्भ में सर्वप्रथम ये स्पष्टीकरण आवश्यक है कि मुक्तक जयन्ती वर्ष 2007 में अर्थात 76वें वर्ष में क्यों आयोजित की जा रही है। मुक्तक जयन्ती समारोह के आयोजन की योजना 75वें वर्ष अर्थात वर्ष 2006 में ही थी, किन्तु मण्डल के कर्मठ सदस्य श्री नरेन्द्र कुमार मुकुल तथा श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव आई.ए.एस. के निधन तथा कुछ अन्य विषम परिस्थितियों के कारण गत् वर्ष मुक्तक जयन्ती समारोह के आयोजन को स्थगित कर दिया गया। इस वर्ष भी पहले अप्रैल, 2007 में मण्डल के एक वरिष्ठ सदस्य श्री बृजेन्द्र कुमार सिन्हा के निधन से हमें आघात पहुंचा, किन्तु यही निर्णय लिया गया कि किसी भी तरह से हिम्मत जुटाकर इस बार आयोजन को सम्पन्न किया जाये। इस आघात से हम लोग उबर भी नहीं पाये थे, कि 17 सितम्बर, 2007 को मण्डल के एक अन्य सक्रिय समर्पित एवं आस्थावान सदस्य श्री मनमोहन शंकर श्रीवास्तव के अकस्मात निधन ने हम सबको झकझोर दिया एवं एक बार पुनः मुक्तक जयन्ती समारोह को स्थगित करने की स्थिति उत्पन्न हो गयी। किन्तु इस बार आयोजन के स्थगन के प्रति आशंकित एवं भयभीत होने के कारण आधे–अधूरे मन से ही सही, किन्तु समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

यद्यपि मुक्तक जयन्ती समारोह को अत्यन्त भव्य रूप में आयोजित करने की योजना थी एवं इस सन्दर्भ में दिसम्बर, 2005 में ही एक बैठक मण्डल के वरिष्ठ सदस्य श्री विमल कृष्ण श्रीवास्तव के निवास स्थान पर इलाहाबाद में आयोजित की गई थी, जिसमें मुक्तक जयन्ती के आयोजन हेतु एक समारोह समिति का गठन किया गया एवं कई अन्य समितियां विभिन्न उद्देश्यों के लिये गठित की गईं तथा उनके पृथक–पृथक सभापति एवं संयोजक भी बनाये गये। इसके पश्चात् सराय हरखू तथा लखनऊ में भी कार्यकारिणी की अन्य बैठकों का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग २ लाख रुपये जुटाने, उद्घाटन समारोह में किसी गणमान्य व्यक्ति को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाने एवं ७ दिवसीय मुक्तक जयन्ती समारोह को आयोजित करने जैसे निर्णय भी लिये गये तथा आवश्यक धन को एकत्रित करने के लिए मण्डल के उन सदस्यों की सूची भी तैयार की गयी, जो 1000, 5000 तथा 10,000 रुपये का दान करने में सक्षम है। इस दिशा में प्रायः सदस्यों की ओर से सक्रिय सहयोग भी प्राप्त हुआ। जुलाई, 2007 में सराय हरखू में कार्यकारिणी की नियमित बैठक सम्पन्न हुई एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा विभिन्न समितियों की ओर से व्यापक कार्ययोजना प्रस्तुत की गयी। इसके पश्चात् अगस्त एवं सितम्बर के माह में इलाहाबाद जौनपुर एवं वाराणसी में सदस्यों को आमंत्रित करने एवं धनराशि को एकत्रित करने का नियमित कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

इस वर्ष मण्डल 7 दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है, जिसके अन्तर्गत 16 अक्टूबर 2007 को मुक्तक जयन्ती समारोह का उद्घाटन किसी गणमान्य व्यक्ति से कराने तथा रामलीला के चुनिन्दा दृश्यों को झलकियों के रूप में प्रदर्शित करने की योजना है। इसके पश्चात् 17 से 21 अक्टूबर, 2007 तक परम्परा के अनुरूप पंचदिवसीय मानक मंचन का नियमित कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा तथा 22 अक्टूबर, 2007 को भव्य मेले का भी आयोजन होगा इसके अतिरिक्त 20 अक्टूबर, 07 को विशाल भण्डारे एवं 22 अक्टूबर, 2007 को विशाल भगवती जागरण की भी योजना है। इन सबसे अतिरिक्त मण्डल के समस्त कार्यक्रमों की वी०डी०ओ० ग्राफी करवायी जा रही है तथा एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है, जिसके लिए कई मंत्रियों एवं गणमान्य व्यक्तियों के शुभकामना संदेश एवं लेख प्राप्त हुए हैं, जिनका मैं आभारी हूँ।

अन्त में मैं मण्डल के सलाहकार समिति के सभी सदस्यों, कार्यकारिणी के सभी सदस्यों, मुक्तक जयन्ती समारोह के सभी सदस्यों एवं उन व्यक्तियों का भी आभारी हूँ, जो मण्डल के सदस्य न होते हुए भी सक्रिय सहयोग कर रहे हैं। व

"जय मण्डल"

– कौशल कुमार सिन्हा,

मण्डल के अमर संस्थापक

स्व० श्री बेनी प्रसाद सिन्हा 'प्रेमी'
नाट्यमाला के रचयिता
एवं
मण्ड के अमर निर्देाक

(बांये से दायें) सर्व श्री प्रेमनाथ श्रीवास्तव (राजा बाबू)
प्रकाश नाथ एवं जयन्त्री प्रसाद (बब्लू जी)

सलाहकार समिति के सदस्य

श्री दयानन्द सिन्हा

श्री ज्ञानेन्द्र सिन्हा

श्री राजेन्द्र नाथ श्रीवास्तव

श्री विमल कृष्ण श्रीवास्तव

छायाचित्र
उपलब्ध
नहीं

श्री मनमथ कुमार श्रीवास्तव

सलाहकार समिति के सदस्य

श्री कृष्ण कुमार श्रीवास्तव

छायाचित्र
उपलब्ध
नहीं

श्री कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव

डा० आर०पी० सिन्हा

श्री नरेन्द्र नाथ सिन्हा

सलाहकार समिति के सदस्य

छायाचित्र उपलब्ध नहीं

श्री बांकेन्द्र सिन्हा

छायाचित्र उपलब्ध नहीं

श्री सोहन लाल श्रीवास्तव

श्री प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव

श्री सर्वदानन्द श्रीवास्तव

श्री शिवमोहन सिन्हा

मण्डल के कार्यकारिणी सदस्य

श्री जैनेन्द्र सहाय सिन्हा
उपाध्यक्ष

श्री कौशल कुमार सिन्हा
मन्त्री

श्री के०पी० श्रीवास्तव
अध्यक्ष

श्री कृष्ण कुमार सिन्हा
संयोजक

श्री सुरेन्द्र कमार श्रीवास्तव
निदेशक

मण्डल के कार्यकारिणी सदस्य

श्री अरुण कुमार
कोषाध्यक्ष

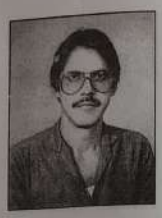

श्री सुनील कुमार 'लाडू'
संयुक्त मंत्री

श्री जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
व्यवस्था मंत्री

श्री पवन कुमार श्रीवास्तव
प्रचार एवं प्रसार मंत्री

डा० अम्बुज श्रीवास्तव
संयुक्त निर्देशक

मण्डल के कार्यकारिणी सदस्य

डा० अजय कुमार श्रीवास्तव
सहायक निर्देशक

श्री ईश्वर चन्द्र श्रीवास्तव
संगीत निर्देशक

श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
रंगमंच प्रबन्धक

श्री सचेन्द्र नाथ सिन्हा 'राजू'
सयुक्त रंगमंच प्रबन्धक

श्री रामचन्द्र श्रीवास्तव
सहायक रंगमंच प्रबन्धक (विद्युत)

मण्डल के कार्यकारिणी सदस्य

छायाचित्र उपलब्ध नहीं

श्री अनुराग जी
सहायक प्रबन्धक (वेशभूषा)

छायाचित्र उपलब्ध नहीं

श्री गौरव जी
सहायक प्रबन्धक (वेशभूषा)

छायाचित्र उपलब्ध नहीं

श्री अजीज जी
सहायक प्रबन्धक (वेशभूषा)

छायाचित्र उपलब्ध नहीं

श्री सौरभ जी
सहायक प्रबन्धक (वेशभूषा)

श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव
प्रभारी रूपसज्जा

छायाचित्र उपलब्ध नहीं

श्री कुंवर लाल श्रीवास्तव
संयुक्त प्रभारी रूपसज्जा

मण्डल के अविस्मरणीय दिवंगत पदाधिकारी

छायाचित्र उपलब्ध नहीं

बाबू छोटेलाल वकील

श्री गोपी शंकर सिन्हा

श्री वीरेन्द्र कुमार लाल

श्री राम प्यारे लाल

श्री ओम प्रकाश सिन्हा

श्री राम वंश लाल

नरेन्द्र कुमार सिन्हा

श्री नरेन्द्र कुमार

श्री वीरेन्द्र नाथ सिन्हा

मण्डल के अविस्मरणीय दिवंगत पदाधिकारी

श्री आनन्द सहाय सिन्हा

श्री सच्चिदानन्द सिन्हा

श्री परमानन्द वर्मा

श्री राम अधारे लाल

श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

श्री शान्ती स्वरूप श्रीवास्तव

श्री विजेन्द्र कुमार सिन्हा

स्वर्ण जयन्ती समारोह के चित्र

हीरक जयन्ती समारोह के चित्र

हमारा पावन मानस मंच

सर्वप्रथम मैं उस परम सत्ता मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी के चरणों में शीष नवाता हूँ, जनकी अनुकम्पा से सन् 1932 में रोपित पौधे को आज पल्लवित, पुष्पित और फलरायी होते देख रहा हूँ। उसके बाद उन पूर्वजों, विशेष रूप से त्रिमूर्तियों (प्रकाश, राजा, बब्बू) की चरण रज प्राप्त करना चाहता हूँ जिनकी प्रेरणा से एक ऐसी धरोहर हम ग्रामवासियों को प्राप्त हुई है जो आज हमें संस्कारित करने के साथ–साथ एकता सूत्र में पिरोये हुए हैं।

सन् 1932 में ग्राम व पोस्ट–सराय हरखू, जनपद जौनपुर के कायस्थ परिवार के कुछ बच्चों द्वारा खेल–खेल में विजयादशमी के अवसर पर अपने सीमित संसाधनों से रामलीला और मेले का आयोजन कर लिया गया जिसका विस्तृत उल्लेख हमारी नाट्यमाला में स्व० श्री प्रकाशनाथ जी द्वारा लिखित बिरहा की पंक्तियों में मिलता है। वर्ष 1933 में स्व० श्री छोटेलाल वकील तथा श्री गोविन्द प्रसाद के विशेष प्रयास से रामलीला नाटक के रूप में सम्पन्न हुई। स्व० श्री बेनी प्रसाद सिन्हा जी के मन में यह विचार आया कि स्वयं उनके द्वारा एक ऐसा नाटक लिखने का प्रयास किया जाये जो रामायण के सभी प्रकरण दर्शाने में सफल हो सके। ईश्वर की कृपा से और सिन्हा जी के अथक प्रयास से पांच खण्डों की एक नाट्यमाला तैयार हो गई। वर्ष 1935 से इसी पुस्तक से रामलीला प्रारम्भ हुई जिसकी अपार दर्शकों द्वारा भूरि–भूरि प्रशंसा और सराहना की गई। इसी नाट्यमाला से प्रदेश एवं प्रदेश के बाहर विभिन्न स्थानों पर रामलीला का प्रदर्शन हो रहा है। नाट्यमाला की अत्यधिक मांग होने के कारण इसके पांच संस्करण अभी तक प्रकाशित किये जा चुके हैं। कुछ समय बाद मंच का निर्माण किया गया जिसे हम राम चबूतरा कहते हैं। हमारा मंच मंदिर की तरह पूज्य समझा जाता है जहां लोगों की बड़ी–बड़ी अभिलाषाएँ पूर्ण होती देखी गई हैं। पहला प्रकरण जो नाट्य माला लेखक स्व० श्री बेनी प्रसाद सिन्हा का ही है। वर्ष 1936 में जिस दिन मंच पर नाट्य प्रदर्शन के दौरान राजा दशरथ के चौथेपन में भगवान रमा का औतार हुआ उसी समय चालीस वर्ष की अवस्था में उन्हें (श्री सिन्हा) भी पुत्र रत्न की प्रान्ति हुई जिसका नामकरण भी राम के रूप में हुआ। चार वर्ष के बाद द्वितीय पुत्र के रूप में लखन जी का जन्म हुआ। हमारे मानस मंच को मंदिर की मान्यता प्राप्त है जहां पर जूता चप्पल पहन कर जाना निषिद्ध है। मादक पदार्थ का सेवन कर मंच पर चढ़ना वर्जित है। पूरे नवरात्रि भर हम ग्रामवासी पूर्णतः सात्विक आहार, विहार एवं विचार को अपनाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अश्विन माह के शुक्ल पक्ष के षष्टी (छठे दिन) से मानस प्रदर्शन कार्यक्रम प्रारम्भ होता है। पांच दिवसीय मानस प्रदर्शन का मंचीय कार्यक्रम रहता है तथा छठे दिन विजयदशमी मेले का वृहद आयोजन होता है, जिसमें दूर–दूर से लोग आते हैं और भरपूर मनोरंजन का लाभ उठाते हैं। उसी दिन रात्रि में भव्य आतिशबाजी, नगर कीर्तन एवं भरत मिलाप का आयोजन होता है।

मानस प्रदर्शन में ग्राम सराय हरखू, जौनपुर के कायस्थ परिवार के ही लोग भाग लेते हैं जिन्हें जन्म से ही श्री सीताराम धर्म मण्डल की सदस्यता प्राप्त होती है। वे देश विदेश में कहीं भी रहते हों, आने की बाध्यता होती है।

ऊपर उल्लेख किया जा चुका है कि मंच को मंदिर के रूप में मान्यता प्राप्त है, अतः दूरदराज से लोग श्रद्धा से आते हैं, अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु नतमस्तक होते हैं और चढ़ावा चढ़ाते हैं। बहुत लोग यहां से मनौतियां मानकर जाते हैं और उन्हें पूर्ण होते देखा गया है।

श्री सीताराम धर्ममण्डल सराय हरखू, जौनपुर पंजीकृत संस्था नहीं है और न ही इसका कोई लिखित विधि विधान है। संस्था को सरकार से किसी प्रकार का कोई आर्थिक सहायता अथवा सहयोग नहीं प्राप्त होता है। हमारी संस्था परम्पराओं एवं नैतिक मूल्यों के आधार पर संचालित होती है। वर्ष 1981 में धर्ममण्डल द्वारा अपनी संस्था के 50 वर्ष पूर्ण करने पर स्वर्ण जयन्ती तथा 60 वर्ष पूर्ण करने पर वर्ष 1992

में हीरक जयन्ती समारोह का भव्य आयोजन किया गया था जिसमें राजनीति के क्षेत्र की महान हस्तियों तथा जनपद की गणमान्य विभूतियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा भाग लिया गया था।

श्री मनमथ कुमार श्रीवास्तव बन्धुओं एवं श्रद्धालुओं के सहयोग से मंच के पीछे एक विशाल अतिथि गृह का निर्माण स्व० श्री छोटे लाल वकील अतिथि गृह के नाम से कराया गया है। यह दशहरा के अवसर पर बाहर से आने वाले अतिथियों को ठहरने की सुविधा तो प्रदान करता ही है साथ ही दशहरा से इतर शादी ब्याह के अवसर पर जनवासे के रूप में इसका उपयोग होता है। वर्ष में एक बार माह जनवरी के द्वितीय शनिवार, रविवार को मंच पर अखण्ड रामायण का आयोजन होता है। दीपावली की रात्रि में यहां पर दीप दान के अतिरिक्त भजन कीर्तन कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

जब यह लेख पत्रिका के माध्यम से आपके हाथ में होगा, हम मण्डल की स्थापना के 76वें वर्ष में मुक्तक जयन्ती समारोह धूम धाम से मना रहे होंगे। इसके सफल आयोजन में तन, मन, धन से दिया गया आप सभी का सहयोग विस्मृत नहीं किया जा सकेगा। व

— सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, निर्देशक,
श्री सीताराम धर्ममण्डल, सराय हरखू , जौनपुर।

प्रेरणा-गीत

नारी ! तुम हो शक्ति राष्ट्र की
शक्ति साधना बिना, न बनता बिगड़ा कोई काम।
नारी तुम हो शक्ति राष्ट्र की शत्–२ तुम्हें प्रणाम
महादेव शिव ने जग हित है आदि शक्ति को साधा।
बने ''अर्द्धनारीश्वर'' जिसमें, रुप तुम्हारा आधा।।
देवों को जब–जब असुरों ने छेड़ा और सताया।
तब देवों को भी विपदा में, ध्यान तुम्हारा आया।।
हे शक्ति! तुम्हारे बलबूते पर वे जीते संग्राम।
नारी तुम हो शक्ति राष्ट्र की, शत्–शत् तुम्हें प्रणाम।।
वीर शिवाजी भी तो मां से, प्रेरित हो आये आगे।
रिपु भी टिक न सके थे जिसकी, प्राण शक्ति के आगे।।
झांसी की रानी बन तुमने, जब तलवार चलाई।
अंग्रेजों जैसे शासक की, छाती भी थर्राई।।
हे ''प्रभात'' उत्साह तुम्हारा, उदासीनता शाम नारी
घर–परिवार, राष्ट्र की दुर्गति तुम्हे पुकार रही है।
युग–युग सेपीड़ित मानवता तुम्हें पुकार रही है।
मानवता छटपटा उठी हैं मन में पीड़ा भारी
आधी आबादी की मूर्दा का है यह परिणाम।
नारी तुम हो शक्ति राष्ट्र, की शत्–शत् तुम्हे प्रणाम।।

संदीप कुमार श्रीवास्तव 'पुलकित'
पुत्र स्व. रामबंश श्रीवास्तव सोहन,
वरिष्ठ सदस्य तथा भूतपूर्व निर्देशक,
श्री सीताराम धर्म मण्डल, सराय हरखू जौनपुर।

भारतीय संस्कृति की मणि परम्पराएँ

परम्पराएँ जीवन और सृष्टि की अभीष्ट हैं, इन्हीं में शायद जीवन की जीवन्तता भी समाहित है। उन्हीं क्रमों में श्री सीताराम धर्म मण्डल का आदर्श जो छिहत्तर वर्षों से अबाध रूप से श्री राम का चरित्र प्रदर्शित करता चला आ रहा है। इसी परम्परा को निभाने के लिए धन–जन की सम्पूर्ण शक्ति भी लगी हुई है। यही परम्परा हमारी धार्मिक भावनाओं और एकजुटता की प्रतीक है। पर्व भावनाओं के अनगिनत रंगों समुच्चय एवं उसकी अभिव्यक्ति का सहज माध्यम है। भारतीय संस्कृति में यह आध्यात्मिकता का प्रतिरूप है। पर्व का बाह्य कलेवर भले ही सामाजिक रूप में झलकता है, परन्तु मूलतः उसका प्राण आध्यात्मिकता में बसता है। जैसे एक दिन नदी से समुद्र ने पूछा कि मेरे पास कोई फटकता भी नहीं और न कोई आदर करता है, पर तुम्हें लोग प्यार करते हैं। इसका क्या कारण है? नदी ने कहा– आप केवल लेना ही जानते हैं, जो मिलता है, संग्रह ही करते हैं। मैं जो भी पाती हूँ उसे आगे बढ़ा देती हूँ, लोग मुझसे जो पाते हैं उसी के बदले में तो प्यार देते हैं। दोनों परम्परागत हैं, लेकिन एक निन्दनीय है तो दूसरा वन्दनीय। हमारा मण्डल भी इस हाथ लेता है तो दूसरे हाथ उसे आगे बढ़ाता भी रहता है। पर्व समष्टि के रूप में लोक–हितकारी है तथा मानवीय का दृढ़ आधार ही शुभ तिथियों में आमोद–प्रमोद के वातावरण में आयोजित पर्वों के लिए प्रचलित तिथिवार एवं त्योहार को उल्लास का प्रतीक पर्याय माना जाता है। परम्परा एक प्रवाह है, जिसका प्राण विवेक है। आज परम्परा हमारे लिए एक शब्द मात्र बन कर रह गया है। इसका बाहरी कलेवर भी विकृत होता जा रहा है। सोच और विचारधारा पर कुप्रभाव रूपी ग्रहण लगा हुआ है। क्योंकि परम्पराएँ टूटती जा रही हैं। इसे टूटने से बचाना है। यही हमारे जीवन की संजीवनी है, जो सदा और सदा वर्तमान की सरस ताजगी से अभिसिंचित है वही परम्परा है जो आत्मिक जीवन की जीवन प्रक्रिया बनकर जीवन को आत्मानुशासित करें, जो सदैव जनकल्याण का उपदेश देती हुई गूढ़ बन्धनों से मुक्ति के अनगिनत आयामों को विस्तृत करें जो आन्तरिक और वाह्य दोनों की सम्पूर्ण रूप से विकसित करें, वह परम्परा है।

हमारे यहाँ की परम्पराएँ सनातन और सास्वत हैं। भारतीय समाज की बनावट और बुनावट में पर्वों का अत्यन्त महत्व है। पर्वों में ज्ञान–विज्ञान का भण्डार भरा पड़ा है। केवल ज्ञानचक्षु खोलना पड़ेगा। क्योंकि ज्ञान की प्यास मानव जाति का अलंकरण है। अंतस में कुछ उद्वेलित हो रहा है, जो शांत होने की राह ढूंढ़ रहा है। इसी शान्ति के लिए अनेक कोशिशें की जाती हैं। किसी मायामृग की खोज में उसका चित्त भटकता रहता है। मंजिल की प्राप्ति होती हुई नहीं दिखाई पड़ती है। गति होती है पर गंतव्य नजर नहीं आता। सच तो यह है कि जीवन के मूलभूत प्रश्नों के उत्तर बौद्धिक तर्कों से नहीं मिलते हैं। बौद्धिक तर्कों में ज्ञान का आभास तो है पर ज्ञान नहीं है। समाधान तो समाधि के शून्यता से ही सम्भव है। स्वयं को खोजे बिना अंतस की जलन नहीं घटती। स्वयं को जानना ज्ञान है। बाकी सब जानकारी के सिवाय कुछ भी नहीं। ज्ञान की प्यास तो परम्पराओं को निभाने से ही बुझ सकती है अथवा प्रभु मिलन से।

जीवन का आदर्श मानवीय परम्पराओं से सिंचित है। आदर्शविहीन जीवन बस अन्तहीन भटकाव मात्र है। जिसकी न कोई मंजिल है और न राह। ऐसे जीवन की दशा उस नाव की भांति है, जिस पर कोई खेवनहार ही नहीं है। आदर्श सघनतम से महासूर्य की ओर उठने की आकांशा है। जो भी आदर्शों की राह पर चले है उन सभी का निष्कर्ष एक है। जिस आदर्श में व्यावहार का प्रयत्न न हो, वह निरर्थक है और जो व्यवहार आदर्श से प्रेरित न हो, वह भयावह है।

अतः भारतीय संस्कृति में परम्परा के पीछे एक सुनिश्चित उद्देश्य है। कालक्रम में पर्वों की वैज्ञानिकता के लोप हो जाने से ये रूढ़ि बन गए और कर्मकाण्डों में सिमट कर रहे गये। विवेक के अभाव में कर्मकाण्ड मात्र बोझ बनते चले जा रहे है। आज उसका बाहरी आवरण रह गया है। शेष समाप्ति की ओर हैं। पर्वों की परम्परा भारतीय संस्कृति की अनुपम मणि मंजूषा है। ये जीवन और समाज के लिये मंगलकारी है। व

– कृष्ण कुमार सिन्हा
संयोजक

"तुम ही कृपा करो बजरंगी"

तुम ही कृपा करो बजरंगी, तो कुछ महिमा तेरी गाँऊ।
साधक पाये भक्ति तेरी, मैं भी कुछ आत्मिक सुख पाँऊ।
सिन्दूरी हैं बदन तुम्हारा, बल विवेक के तुम आधारा।
इतनी श्रद्धा बढ़े हृदय में निशि दिन सुमिरू नाम तुम्हारा।
प्रतिपल प्रीति करूँ मैं कृपा तेरे स्वामी की पाँऊ।
तुम ही कृपा करो बजरंगी.....।

तुम दुखियों के दुःख हरते हो, सर्वकर्म पूरन करते हो।
संकट मोचन कहते तुमको तुम ही तो कष्ट हरते हो।
हारे को शक्ति देते हो। साधक को मुक्ति देते हो।
पहुचाकर आराध्य शरण में, बन्धन से मुक्ति देते हो।
तुम तो हो अनन्य सेवक, कुछ मैं भी प्रभु सेवा कर पाँऊ।
तुम ही कृपा करो बजरंगी.....

राम नाम तुम्हारा प्यारा है, इसलिये जपता लिखता हूँ।
काम तेरी शक्ति से होते, मैं तो बस करता दिखता हूँ।
तुमने लंका दहन किया तो, भस्म हुये थे केवल पापी।
सारी लंका जली आग से, नही विभीषण के घर व्यापी।
प्रभु चरणो में मुझे रमा दो, तो मैं उनकी करूणा पाँऊ।
तुम ही कृपा करो बजरंगी.....।

– शुभम सिन्हा, लखनऊ

"वीर हनुमान"

राम भक्त हनुमान को कौन नहीं जानता है, भगवान राम के प्यारे माता सीता के दुलारे पवन पुत्र को कौन नहीं जानता। वीर हनुमान जिसने सारी लंका को भष्म कर डाला था, महाबली रावण को एक ही मुष्टि प्रहार से गिरा कर धूल चटा दी थी, सुग्रीव के सखा श्री वीर हनुमान को कौन नहीं जानता है, जिसने सीना फाड़कर यह साबित कर दिया कि भक्ति में शक्ति होती है, और अपने ईष्ट को सीने में भी स्थापित किया जा सकता है। जब युद्ध के मैदान में रावण के पुत्र मेघनाथ के द्वारा श्री राम के छोटे भाई लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने से मूर्छित हो गए तो संजीवनी बूटी लेने के चक्कर में पूरे पर्वत को ही उठा लिया, ऐसे वीर हनुमान को कौन नही जानता।

वीर हनुमान वैसे तो भगवान शिव के अवतार हैं, जो भगवान राम की सेवा करने के लिए हनुमान का रूप लेकर पिता पवन व माता अंजनी के घर में अवतरित हुए, बचपन से हनुमान वीर रहे, एक बार हनुमान ने उगते हुए सूर्य को खिलौना समझ कर मुँह में डाल लिया, सारे ब्रह्माण्ड में घनघोर अंधकार छा गया, सब धरतीवासी तथा देवतागण परेशानी में डूब गए। आज सूर्य भगवान को क्या हो गया, कहां चले गए, आखिर पता लगा कि हनुमान जी के मुंह में सूर्य देवता है, तो उनसे विनती करके सूर्य भगवान को छुड़ाया गया।

महा पराक्रमी वीर हनुमान की यदि पवित्र भाव से साधना की जाये तो उचित फल प्राप्त होता है, धर्म, अर्थ काम और मोक्ष ये चार पदार्थ ही मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक हैं, इन्हीं का लक्ष्य मानकर मनुष्य जीवन जीता है, इस संसार में ऐसा मनुष्य मिलेगा, जो बिना किसी लालच के, किसी की सेवा करता है, या किसी देवता की साधना करता है, प्रत्येक प्राणी के मन में लालच होता ही है, चाहे वो लालच किसी भी रूप में हो। मेहनत और ईमानदारी से कमाया गया धन सुख और शान्ति दोनों प्रदान करता है, और फिर साधना के द्वारा जो फल प्राप्त होता है, उस फल की तो किसी फल से तुलना नहीं की जा सकती। जब साधना के द्वारा ही फल प्राप्त करना है, तो इस कलियुग में राम भक्त वीर हनुमान की साधना की जाये तो उचित फल मिलता है।

वीर हनुमान शीघ्र फल देने वाले तथा अपने भक्तों पर दया करने वाले हैं, क्योंकि वे जानते हैं, और समझते भी हैं, जो किसी की सेवा करता है, साधना करता है, तो उसे क्या चाहिए, इसलिए वीर हनुमान जल्दी प्रसन्न होकर, अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करते हैं।

एक बार हनुमान जी ने माता जानकी से पूछा कि –

लाल लंगोट पहने सारी देह पर सिन्दूर लगाए हनुमान की छटा सारी दुनिया से ही अलग है, एक बार माता सीता अपनी मांग में सिन्दूर लगा रही थीं, उसी समय हनुमान का वहां जाना हो गया, हनुमान ने माता सीता जी से क्षमा मांग कर पूछा कि माता आप क्या लगा रही हैं ? तब माता सीता ने उत्तर दिया – हे पुत्र हनुमान जो स्त्रियां अपनी मांग में सिन्दूर लगाती हैं, तो उनके स्वामी (पति) की आयु लम्बी होती है, बस इतना सुनते ही हनुमान जी ने तो जरा भी देर नहीं की और ढेर सारा सिन्दूर लाकर अपनी देह पर डाल लिया, और माता सीता के पास आ गए, माता सीता ने हनुमान को देखा तो हसकर पूछा, अरे हनुमान तूने यह क्या कर रखा है, हनुमान जी ने बड़े भोलेपन से जवाब दिया है, माता आपके सिन्दूर मांग में लगाने से स्वामी (पति) की आयु लम्बी होती है, तो मैंने तो अपनी सारी देह ही लाल कर डाली, जिसे मेरे स्वामी श्री राम की आयु और लम्बी हो जायेगी।

"संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलवीरा।"

– श्री बृजेश कुमार सिन्हा (कुनकुन),
हनुमत् कृपापात्र

राम को भक्ति के आधार

भारतीय संस्कृति और सम्पूर्ण भारतीय वांगमय ईश्वरी साधना, आराधना एवं भक्तिमय सिद्धान्तों से भरा–पटा है। सन्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने विभिन्न रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज को भक्ति की धारा मे गोता लगाने हेतु विभिन्न माध्यमों से सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं। इस सम्बन्ध में मेरा यह विचार है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने अनुपम एवं अनूठे ग्रन्थ रामचरित मानस में उन्होंने उद्देश्यपूर्ण ढग से पहले शिव और पार्वती का विवाह सम्पन्न कराया और उसके बाद राम और सीता का व्याह सम्पन्न होता है। यदि गोस्वामी तुलसीदास चाहते तो इस क्रम को उलट भी सकते थे परन्तु उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया यह विचारणीय है। 'मानस' के प्रारम्भ में ही उन्होंने कहा है कि –

"भवानी शकरौ बन्दे, श्रधा विश्वास रूपिणौ।
याभ्याम् बिना न पश्यन्ति, सिद्धाः स्वांतः स्थमीश्वरं"

बिना श्रद्धा और विश्वास के बड़े–बड़े योगी, यति एवं संत महात्मा निराकार रूप में स्थित अपने अन्दर के ईश्वर को न देख पाते हैं, न समझ पाते हैं। जहां माँ पार्वती श्रद्धा की मूर्ति हैं वहीं भगवान शिव साक्षात विश्वास हैं। जब श्रधा व विश्वास का सम्बन्ध होता तभी साधना के क्रम में एक स्थित आती है कि व्यक्ति ईश्वर की प्राप्ति कर सकता है।

जहां माता सीता आद्याशक्ति एवं भक्ति हैं वहीं श्रीराम साक्षात ब्रह्मवै ईश्वर हैं, इसलिए पहले श्रद्धा विश्वास का विवाह सम्पन्न होता है और उसी क्रम में आगे चलकर भक्ति और भगवान का विवाह महाराज जनक की यज्ञशाला में सम्पन्न होता है।

यह निर्विवादित मान्यता है कि ब्रह्म अकर्ता है और शक्ति द्वारा ही सम्पूर्ण कार्य का संचालन होता है। राम ब्रह्म के रूप में अकर्ता है और सीता शक्ति के रूप में कर्ता है। राम और सीता के रूप में अकर्ता ब्रह्म और कर्ता सीता का जब सम्बन्ध होता है। तभी सम्पूर्ण सृष्टि का यथा विधि सकारात्मक संचालन होता है और उस संचालन के क्रम में जहां माता सीता 'उद्भव स्थित संहार कारिणी' के रूप में प्रकट होती हैं और उन्हीं के माध्यम से ईश्वर के रूप में राम सम्पूर्ण कार्य का संचालन करते हैं।

माता सीता का जन्म विचार की नगरी जनकपुर में होता है, उनके द्वारा पालन धर्म की नगरी अयोध्या में होता है और उन्हीं के माध्यम से संहार अधर्म व अन्याय की नगरी लंका में होता है। उपरोक्त से यही स्पष्ट होता है कि एक ही शक्ति उद्भव, पालन और संहार में है और उसी शक्ति की आराधना से ही शक्तिमान होते हुए भी ईश्वर शक्ति संचालन में सक्षम होते हैं। इसीलिए भक्ति करने वाले साधक शिव–पार्वती से श्रधा विश्वास प्राप्त करके साधना की उस उत्कृष्टता को प्राप्त हो जाते हैं जिससे वे भक्ति व भगवान को भी प्राप्त कर लेते हैं।

"जासु नाम भव भेषज, हरन घोर त्रय शूल।
सो कृपाल मोहि तोहि पर, सदा रहे अनुकूल।"

– श्रीराम यादव
आई.ए.एस., से.नि.

माँ

माँ तो है माँ, माँ जैसा कोई कहाँ।
माँ ने ही जीवन दिया, माँ से है मेरा जहाँ।।

ईश्वर कुछ गढ़ रहे थे, एक अप्सरा वहाँ से गुजरी और उसने ईश्वर से पूछा–"यह आप क्या बना रहे हैं ? मैं आपको लगातार कई दिनों से काम करते देख रही हूँ"। ईश्वर ने जवाब दिया–"मैं माँ को गढ़ रहा हूँ"। अप्सरा की जिज्ञासा थी–"कैसी बनानी हैं" ? ईश्वर ने उत्तर दिया– "जिसकी कोख से मानवता जन्मे, जिसकी गोद में सृष्टि समा जाये, जिसका स्पर्श बड़ी से बड़ी चोट को सहलाकर ठीक कर दे, जिसके दुलार प्यार से बड़े से बड़े, सदमें से उबार दे। जिसके दो हाथ सबको दिखें पर हैं कई, ताकि जीवन संवारने का उसका कर्तव्य बिना बाधा के पूरा हो सके। जिसके मन में भी आंखें हो ताकि वह दूर बैठी अपनी संतान को देख सके। जो बीमार होने पर भी दस लोगों वाले परिवार का भोजन बना दे। नाजुक हो पर हर मुश्किल को हरा सकने का दम रखे। जिसके आंचल तले सृष्टि को सुरक्षा मिले। जिसके नेत्रों में अपने बच्चों के लिए भाव भरा जल हो और उनसे शत्रुओं के लिए ज्वाला। जिसके दर्शन मात्र से मानवता कृत–कृत हो। मैं उसे गढ़ रहा हूँ, जिसे मानव दुःख तो बहुत पहुचायेगा, परन्तु उसका हाथ न तो आशीर्वाद देने से रुकेगा और न दिल दुआ मांगने से। मैं अपना प्रतिरूप गढ़ रहा हूँ। मैं माँ बना रहा हूँ अर्थात माँ के निःस्वार्थी कर्मों की व्याख्या जितनी भी की जाये कम होगी।

गीता में सही कहा है– यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता,
अर्थात जहां नारी की पूजा/सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं।

– सोबित दुबे (दीपक), लखनऊ

India my country- Famous for

Punjab for fighting,
Bengal for writing,
Sikkim for duty,
Kashmir for beauty,
Rajasthan for history,
Maharastra for Victory,
Haryana for milk,
Karnataka for silk,
U.P. for sugarcane,
Himachal for apple,
Orissa for temple,
Madhya Pradesh for tribals,
Bihar for minerals,
Delhi for lal Qila,
Sarai Harkhoo for Ram Lila

Each place, each state,
make India so great.

Little Magic Words

There are three magic words
That can open any door with ease
One little word is "Thanks"
And the other little word is "Please"
If you want something
Say "Please" may I have something
Good Manners are never out of style
If you have hurt someone
Say "Sorry" to that someone
Good manners are never out of style.

Chinmay Kala, IV D
The Chintels School,
Kanpur

"मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है"

"सकल पदारथ है जग माही, करमहीन नर पावत नाहीं।"

यह धरती या भूमि एक कर्मक्षेत्र है। यहां जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। यदि आपसे कोई कहे कि आपकी किस्मत बुलन्द है, तो मेरे हिसाब से एक कर्मशील व्यक्ति को उतना फर्क नहीं पड़ेगा जितना कि उसके विपरीत कर्महीन व्यक्ति पर पड़ेगा। कर्महीन व्यक्ति जीवन का सच्चा सुख नहीं प्राप्त कर सकता।

मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। वह अपने आज को परिश्रम, हिम्मत और लगन से व्यतीत करे तो उसका कल सुरक्षित और सफल हो सकता है। इसके कई उदाहरण हैं –

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब,
पल में परलय होयगी, बहुरि करैगो कब।"

आप सबने चीटियों और टिड्डे की कहानी तो सुनी ही होगी। जिसमें चीटियाँ गर्मियों में अपना घर बनाती और टिड्डा उन्हें चिढ़ाता ही रहता था। फिर शीत के मौसम में उसे चीटियों के पास मदद मांगने जाना पड़ा था।

यह कहानी यह सिद्ध करती है कि हमें अपने कल के लिए आज से मेहनत करनी पड़ती है। अन्ततः मैं यही कहन चाहूंगी कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। भाग्य के भरोसे रहने वाले निष्क्रिय व्यक्ति को जीवन सच्चा सुख नहीं पा सकते और हम सभी को यह बात याद रखनी चाहिये कि

"भगवान भी उन्हीं की सहायता करते हैं,
जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं।"

– निहारिका श्रीवास्तव
द चिन्टल्स स्कूल, कानपुर।

DISCIPLINE

Let us see how many marks Discipline carrys....

D-	Fourth letter alphabet	-	04
I-	Ninth letter alphabet	-	09
S-	Ninteenth letter alphabet	-	19
C-	Third letter alphabet	-	03
I-	Ninth letter alphabet	-	09
P-	Sixteenth letter alphabet	-	16
L-	Twelveth letter alphabet	-	12
I-	Ninth letter alphabet	-	09
N-	Fourteenth letter alphabet	-	14
E-	Fifth letter alphabet	-	05
			100

So, it carry's 100% marks. We should adopt it in our every phase of life and make it full of glory and happiness.

Sheenu Kala, VIII B
The Chintels School, Kanpur

राम चरित मानस एक जीवन दर्शन

मान्यवर,

पहली बात तो यह है कि मैं यह कोई लेख नहीं लिख रहा हूँ। मेरी पाठकवृंद से बातचीत और अपील है। मेरा सानिध्य परमपूज्य गुरुदेव श्री मदन स्वरूप श्रीवास्तव से सन् 1997 में हुआ, जो मंडल के वरिष्ठ सदस्य भी हैं। दीक्षा के समय मैंने उनसे पूछा एक इंसान को इंसान बनने के लिए क्या करना चाहिये, उनका उत्तर था राम चरित मानस का पाठ करो। राम चरित्र का अनुसरण करने का प्रयास करो, इंसान बन जाओगे और शान्ति मिलेगी। मैंने उनसे कहा राम चरित मानस का पाठ करना मेरे बस का नहीं है, कोई आसान रास्ता बताइये। उन्होंने कहा राम चरित मानस की एक चौपाई लो और उस पर चलना शुरू करो कल्याण होगा। वह चौपाई है –

परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।

बस एक चौपाई पर अमल करना शुरू किया जीवन धन्य हो गया, काफी शान्ति मिली है।

राम चरित मानस का मंचन पूरे देश में मात्र इस निमित्त हो रहा है कि इसके दर्शन से कोई भी दर्शक राम चरित्र के किसी भी अंश पर चलना शुरू करता है तो इसकी सार्थकता है।

मेरा कहना मात्र यह है कि मात्र मानस मंचन करके इतिश्री न कर दें, राम चरित्र पर मंथन अवश्य करें।

मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मकर जयन्ती के पावन पर्व पर यह संकल्प करें कि राम चरित्र के किसी अंश का अनुसरण आज से ही प्रारम्भ कर दूंगा। मेरा विश्वास है जीवन खुशियों से भर जायेगा।

– कृष्ण मोहन सिन्हा 'मुन्ना'

स्वः प्रकाशनाथ, स्वः जयन्ती प्रसाद (बब्बू) स्वः राजाबाबू

सराय हरखू ग्राम में सड़क के बगल।
मानस नगर में सुशोभित है, श्रीराम जी का महल।।
ऊंची मंजिल है, क्षेत्र है, क्षितिज तक।
5 दिन की लीला होती, शाम से रात्रि तक।।
स्वः प्रकाश, बब्बू, राजाजी हैं इसके संस्थापक।
जो याद रखे जायेंगे प्रलय काल तक।।
क्रूरकाल ने मण्डल का दीपक बुझाया।
पर मण्डल के सदस्य 'अजय' ने उनको नहीं भुलाया।।
विश्वकर्मा की भूमिका स्वः राम प्यारे ने निभाया।
जिससे ये मण्डल में काफी शोहरत है पाया।।
शादी हो या खेल हो, या किसी महात्मा का आगमन।
चुना जाता है श्री सीताराम धर्म मण्डल का प्रांगण।।
अगनित दर्शक जहां दर्शन के लिये आते हैं।
उस 'मानस प्रांगण' को 'अजय' सादर शीश झुकाते हैं।

जय मण्डल

अजय कुमार श्रीवास्तव (जय सिंह)
सदस्य, श्री सीताराम धर्म मण्डल,
सरायहरखू, जौनपुर।

भरत-राम युद्ध

बड़े–बड़े युद्धों की तुमने सुनी भाइयों गाथायें,
पर भरत रमा का युद्ध न तुमने, कभी सुना हम बतलायें
एक बार जब भरत शत्रुहन, थे अपने ननिहाल गये
राम चन्द्र का राज तिलक करने के उने विधान नये।
कुशल मंथरा दासी से हो प्रेरित कैकेई रानी
राम जाय वन, भरत बने राजा यह हठ उसने ठानी
वचनबद्ध दशरथ ने, यह सब बात विवश हो स्वीकारी
चले राम के साथ लखन, वन चली संग सीता प्यारी।
पुत्र विरह में दशरथ ने कर दी समाप्त जीवन लीला
लौटे भरत शोक विह्वल तन शिथिल देह मन भी ढीला
कष्ट हृदय में और साथ में, ले गुरुजन पुरुजन सारे
चले भरत भाई से मिलने चित्रकूट मन के मारे।
दल बल सहित भरत पहुंचे, श्री राम निकट, लक्ष्मण बोले
भरत चाहते हों तो उनका, हमसे अभी युद्ध हो ले
इधर लखन तैयार युद्ध को देख भरत की कटकाई
उधर भरत की प्रेम व्यथा लख आंख राम की भर आई।
राम लिये तलवार त्याग की बार–बार चमकाते थे
भरत भक्ति की ढाल लिये उनका हर बार बचाते थे
गहन प्रेम का अग्निवाण जब भरत छोड़ते होता रण
राम धैर्य की जल वर्षा कर उसे बुझा देते तत्क्षण।
राज्य नहीं मैं ग्रहण करूंगा भिड़ो भरत चाहे जितना
तात न मैं भी हारूंगा क्यों व्यर्थ ठानते हठ इतना,
राम रहे ललकार, 'भरत मैं तुमसे राज कराऊंगा'
भरत कह रहे–सुनो तात, तुमको वन से लौटाऊंगा।
इसी बीच श्री भरत राम के चरणों पर कुछ ललचाये
प्रेम समर में राम हृदय हारे, जैसे कुछ शरमाये,
भरत भरे मन–नयन–कंत, बोले रुक–रुक हे राम प्रवर
किसी गांव में डाल झोपड़ी बस जाऊंगा छोड़ नगर।
राम विवश हो गये, भरत की ओर खड़ाऊं खिसकाई
मुसकाये श्री राम, भरत ले चले पादुका मन भाई
राज्य त्यागने हेतु जगत में कभी न कोई युद्ध हुआ
दोनों पक्ष जहां जीते हों, ऐसा कभी न युद्ध हुआ।

साभार – नंदन

– विकास, पुत्र स्व० श्री बिजेन्द्र कुमार सिन्हा

"कलयुग में आध्यात्म"

युगों–युगों से मानव जीवन को सांसारिक माया से विलग करने के लिये मनुष्य 'आध्यात्म' का सहारा लेता रहा है। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने जीवन नैया को पार लगाने के लिए 'आध्यात्म' को सांसारिक जीवन में सर्वोपर्य स्थान प्रदान किया। आध्यात्म को सिर्फ धार्मिक जीवन में ही नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन, राजनैतिक जीवन यहां तक कि अर्थोपार्जन में भी विशेष महत्व प्रदान किया गया।

संसार के प्रायः सभी धर्मों में ईश्वर के निराकार या साकार रूप को स्वीकार किया जाता है। और उसी प्रकार उसकी उपासना की जाती है। किन्तु हिन्दू धर्म ग्रन्थों में कहा गया है कि –

सगुणहि अगुणहि नहिं कुछ भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा।।
अगुन अरूप अलख अज सोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।

वास्तव में आध्यात्म मानव जीवन में समरसता को स्थापित कर मानवीय संस्कार, नैतिक मूल्यों एवं संयमित जीवन को बल प्रदान करता है। किन्तु वर्तमान युग अकलयुग) में समस्त मानव जाति निर्माण की तीव्र प्रक्रिया में आध्यात्मिक बल का परित्याग कर अधार्मिक एवं अमानवीय कर्मों के द्वारा अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए अभिशप्त सा प्रतीत होता है। युगों–युगों की विकास प्रक्रिया में जहां उसने वैज्ञानिक प्रगति के द्वारा नये आयाम स्थापित किये हैं। वहीं स्वयं वह मानसिक अशान्ति का शिकार हो गया है। नित नये–नये अविष्कारों से वह स्वयं की पहचान खोता जा रहा है। जिसके फलस्वरूप समाज में अनैतिकता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, ईर्ष्या, लोभ आदि अनैतिक मूल्यों का बोलबाला होता जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में सृजन के सारे तत्व दुर्बल पड़ जाते हैं, तो आध्यात्मिक और भौतिक क्षेत्र में दरिद्रता की विभीषिकाएँ सिर उठाने लगती हैं। इसी प्रकार पतन से जूझने वाली प्रखरता अपनी वरिष्ठता भूलकर ललक, लिप्सा के गर्त में गिरने लगती है। तो निकृष्टता को अपनी विनाशलीला रचने के लिए खुला क्षेत्र मिल जाता है। सृजन की शिथिलता और विनाश की स्वच्छन्दता का असंतुलन ही व्यक्ति और समाज के सम्मुख अनेकानेक विपत्तियाँ खड़ी करता है। समस्याएँ और कठिनाईयाँ इसी स्थिति में आंधी तूफान की तरह उठती हैं। सर्वनाशी विभीषिकाओं का आधारभूत कारण असंतुलन ही है। जिससे देवता दुर्बल पड़ता है और दैत्य को स्वच्छन्द रहने का अवसर मिलता है।

भगवान ऐसी ही विषम परिस्थितियों में प्रगट होते हैं। मनुष्य का पौरुष जहां लड़खड़ाता है, वहां गिरने से पूर्व ही सृजेता के लम्बे हाथ असंतुलन को संतुलन में बदलने के लिए अपना चमत्कार प्रस्तुत करते दिखाई देते हैं। गीता में भगवान कृष्ण स्वयं कहते हैं कि –

यदा–यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय–संभवामि युगे–युगे।।

ठीक इसी प्रकार राम चरित मानस में तुलसीदास जी लिखते हैं कि –

जब–जब होहिं धरम की हानी। बाढ़हिं असुर महा भटमानी।।
तब–तब प्रभु धरि विविध शरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

यहाँ धर्म की हानि का तात्पर्य मनुष्य के विवेक रहित कर्म से है। वह अपने अहंकार में कभी हरण्यकश्यप, कभी कंस, कभी भस्मासुर, कभी महिषासुर, तो कभी रावण जैसा राक्षस बन समाज के नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों को पददलित करता है। तब भगवान को अपने भक्तों की रक्षा एवं सृष्टि संतुलन हेतु कभी वामन, कभी नृसिंह, कभी कृष्ण, कभी राम तो कभी कल्कि के रूप में अवतरित होना पड़ता है।

ईश्वर के विभिन्न अवतारों में भगवान श्रीराम की छवि जनमानस में जिस तरह रची–बसी है, वह अपने आप में एक आश्चर्य ही है। त्रेतायुग के श्रीराम आज भी भावनात्मक रूप से पृथ्वी मण्डल पर विद्यमान रहकर अब भी अगणित मनुष्यों को प्रभावित कर रहे हैं। 'राम' का नाम एक ऐसा नाम है, जो सोते–जागते, उठते–बैठते, स्मरण किया जाता रहा है। वह मनुष्य की भावनाओं को इतनी गहराई से छू गया है, कि पीढ़ी–दर–पीढ़ी मनुष्य के मन मस्तिष्क में दृढ़ता के साथ स्थापित होता जा रहा है। हम देखते हैं कि मृतक के पीछे चलने वाला समुदाय सिर्फ एक ही शब्द की दुहाई देता है – 'राम नाम सत्य है', यह श्रीराम के नाम का भावनात्मक विस्तार ही तो है, जो मनुष्य के मृत हो जाने पर भी अपनी सत्यता सिद्ध करता है और जनमानस को यह अनुभूति दिलाता है कि 'राम नाम' के अतिरिक्त इस संसार में सब कुछ मिथ्या है, न कोई राजा है, न कोई रंक है। यह दुनिया माया बंधन है। इस बंधन से सिर्फ एक सत्य 'राम–नाम' का स्मरण ही मुक्ति दिला सकता है। किन्तु साधारण मनुष्य इस नाम के निहितार्थ को समझने में असफल रहा है।

भगवान श्रीराम की उपरोक्त छवि को हम सम्पूर्ण जनमानस में स्थापित करने के लिए 'श्री सीता राम धर्म मण्डल सरायहरजू' नामक संस्था के माध्यम से भगवान श्रीराम के निर्मल चरित्र को प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए कृत संकल्प है। अनेकानेक विकास की प्रक्रिया से गुजरने के बाद भी मनुष्य जीवन की गहराई को जानने में असफल रहा है। उसकी मूल स्थिति दिनकर जी की निम्न पंक्तियों में परिलक्षित होती है –

झर गयी पूंछ, रोमान्तक झरे, पशुता का झरना बाकी है।
बाहर–बाहर तन संवर गया, मन अभी संवरना बाकी है।।

हमारी संस्था का प्रयास आधुनिक जीवनशैली में आध्यात्म को स्थापित कर मनुष्य के अन्दर व्याप्त पशुवत गुणों को नष्ट कर, मानव के सरस मन को संवारने की प्रक्रिया में अग्रसर है। व

– डॉ० अजय कुमार श्रीवास्तव
सहायक निर्देशक

मण्डल अमर रहे

जय मण्डल, अमर रहे, गीत अमर के गाता चल।
दिवाने मण्डल के हम, यह सबको बताता चल।।
अमर रहा है, अमर रहेगा, हम सबके दिवानों की।
छुपी हुई है, गाथा इसमें प्रकाश बब्बू राजा की।।
कष्ट उठाये, लगन लगाये, पर मस्तक नहीं झुकाया है।
बेनी प्रसाद की लय पर धर्म मण्डल लहराया है।।
छोड़ सभी चिन्ता मन की, प्रभु की आस लगाये चल।
जय मण्डल, अमर रहे, अमर गीत यह गाता चल।।

"जय मण्डल" "अमर रहे"

– पवन कुमार श्रीवास्तव
पुत्र श्री कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव,
प्रचार/प्रसार मंत्री
श्री सीताराम धर्म मण्डल,
मानस नगर, सराय हरखू, जौनपुर, उ0प्र0।

"मण्डल के प्रति अपना भाव"

मण्डल चन्दन की गन्ध है, मण्डल रेशम का तार।
बंधा हुआ जिस तार से, गांव घर परिवार।।
जगह-जगह तिरथ करो, फिरो सुबह से शाम।
मण्डल के प्रांगण सा नहीं, दूजा कोई धाम।।
शीश नवाते, घूमते गये, अगनित देखे मण्डल धाम।
श्री सीताराम धर्म मण्डल के आगे, सभी हैं बेकाम।।
यहाँ वहाँ-जहाँ-तहाँ पहुंचे अपने पांव।
मण्डल सेवा में तन-मन रहे, और 'किशन' नहीं कहीं छांव।।

"जय मण्डल"

अश्विनी कुमार श्रीवास्तव 'किशन'
मानस नगर, सराय हरखू, जौनपुर, उ0प्र0।

पढ़ाई का महत्व

एक साल तक मौज लिया, दर्जा से बिस्तर गोल किया।
कापी किताब सब बेचि-बेचि, पिक्चर में पैसा खर्च किया।
जब आइला सालाना इम्तहान, दिन रात जाग के एक किया।
बजरंग बली के दर्शन कर, कापी पर नाम घसीट दिया।
आगे पीछे का कुल लड़िकन, अच्छे नम्बर से पास भयेन।
देवी देवता ना साथ दिहेन, हमरै पत्ता साफ किहेन।
बाबू कहेन ई ठीक भवा, जब लड़िकन मन से न पढ़ि है।
बजरंग बली के कौन गरज, बजरंग बली का खुद पढिहै।।

– दीक्षा सिन्हा
सराय हरखू, जौनपुर

ईश्वर

सबके हृदय में रहने वाला,
सबका सत्य का पाठ पढ़ाने वाला।
सही राह दिखाने वाला,
प्रेम का दीप जलाने वाला।
विश्व शक्ति लाने वाला,
स्वगत निर्माण करने वाला।
कौन है तू कैसा है तू,
न हमने कभी तुझे देखा है।
न हमनें कभी तुमसे बात की है।
सही है तू हमें कैसा दिखेगा
हमसे बात कैसे करेगा
तू तो सबके मन में है।
हृदय मे वास करने वाला।

– इकबाल बहादुर श्रीवास्तव

इंसान

जिसे रोका न जा सके, उसे तूफान कहते हैं।
मुसीबत में भी जो न डोले, उसे ईमान कहते हैं।
जो चले वक्त के पीछे, उसका कोई मोल नहीं।
जिसके पीछे वक्त चले, उसे इंसान कहते हैं।

प्रयास करो हार नहीं होती

लहरों की डर से नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नही होती।
डुबकिया सिन्धु में गोताखोर लगाता है,
जा, जाकर खाली हाथ लौट आता है।
मिलते नहीं सहज मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन की त्यागो तुम,
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम।
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

अनूप कुमार श्रीवास्तव, सदस्य,
श्री सीताराम धर्म मण्डल,
मानस नगर, सराय हरखू जौनपुर, उ०प्र०।

बेबसी

एक अंतहीन कोशिश
एक माँ की, बेटी की, बहू की.....
एक स्त्री की.....
हाँ ! उसी स्त्री का जारी है यह सफर भी
मुश्किलों के कारवां के संग
इस जमीं से उस आसमां तक.....
पर, अभी भी छूटे नहीं हैं
उम्मीदों के साये
धुंधली नहीं हुई आशाओं की किरण
उसके 'वजूद' की शक्ति
मजबूत इरादों की उफनती नदी
कीचड़ में खिलती कुमुदनी सी
उस औरत को अब
पहचानने लगा है सारा जहाँ
दूर नहीं उसकी कामयाबी का समां
हाँ ! मुट्ठी में है उसके सारा आसमां.....
इतिहास के गलियारों में
अविस्मरणीय गूंज बन चुकी है
उसकी जुबां
मील का पत्थर बन गये हैं
जिसके कदमों के निशां
याद कर किसने है किसका दुख सहा
दर्द अपनी जिन्दगी का सिर्फ अपना है
बांटना है तो बांट सिर्फ सुख यहाँ
क्योंकि जिन्दगी का अर्थ तो हंस-हंस के जीना है
मायूसी से तो मुर्दे जिया करते हैं
लेना हो सबक तो फूलों से ही लो
कांटों से घिर कर भी जो जिन्दादिली से खिला करते हैं।

तत्व ज्ञान

मनुष्यता के गुणों से हीन प्राणी चाहे रावण से धनवान, शुक्राचार्य से विद्वान, हिरण्यकश्यप से पराक्रमी, कंस से योद्धा, मारीच से मायावी, कालनेमि से कूटनीतिज्ञ, भष्मासुर से शक्तिशाली क्यों न हो जाये, पर वे न अपने लिए, न दूसरों के लिए, किसी के लिये भी शक्ति का कारण न बन सकेंगे। यह समृद्धि अयोग्य लोगों के कुपात्रों के हाथ में जितनी बढ़ेगी उतना ही क्लेश बढ़ेगा, अशान्ति की कालिमा घनी होगी।

अमित कुमार श्रीवास्तव (राजू), सदस्य,
श्री सीताराम धर्म मण्डल,
मानस नगर, सरायहरखू, जौनपुर, उ०प्र०।

पहला नम्बर

हुआ मिठाई का सम्मेलन,
संचालक था काला जामुन।
सजी–धजी थी खूब इमरती,
छन–छन सबसे बाते करती।
मचा रहा था हल्ला–गुल्ला,
लुढ़क–लुढ़क के रसगुल्ला।
बर्फी आई थी इतराती,
साथ जलेबी रस टपकाती।
बालूशाही सोच रही थी,
बैठी खुद को कौंच रही थी।
होगी कोई जुगत भिड़ानी,
बनूं मिठाई की मैं रानी।
किन्तु वाह गाजर का हलवा,
हलवे का था ऐसा जलवा।
उसने अपना रंग जमाया,
सबसे पहला नम्बर पाया।

श्रीमती रुपाली श्रीवास्तव
पुत्री श्री कौशल कुमार सिन्हा

राम लीला

सराय हरखू का है खेल निराला
रामलीला, रामलीला
कोई बनता वानर भालू
कोई बेचे चाट कचालू
कोई बनता राम लक्ष्मण
कोई बनता भरत शत्रुहन
कोई बनता मेघनाथ
व कोई बनता रावण
राम रावण का स्वांग करते
सब जन देख मुदित होते
हनुमान ने फूंकी लंका
राक्षस गया सब भाग चले
विजयदशमी में सब नाच उठे
रावण लख लख हाथ मले
राम ने रावण को मारा
अत्याचारी का नास किया
तिलक विभीषण का किया
सब जन का दुःख दूर किया।

नेहा सिन्हा

अच्छी बातें

1- जीवन में एक बार मिलती है – माँ, बाप, हुस्न, जवानी।
2- भाई को भाई का दुश्मन बना देती है – जन, जर जमीन।
3- याद रखना जरूरी है – सच्चाई, कर्तव्य, मौत।
4- इन्सान को जलील करती है – चोरी, चुगली, झूठ।
5- असल उद्देश्य से रोकती है – बदचलनी, गुस्सा, लालच।
6- हर एक को प्यारी होती है – औरत, दौलत, औलाद।
7- कोई दूसरा नहीं चुरा सकता – अकल, इलम, हुनर।
8- गम से घिरे होते हैं – ईष्यालु, काहिल, वहमी।
9- निकलकर वापस नही आती – तीर कमान से, बात जुबान से, आत्मा शरीर से।
10- अपनी आदत पर मजबूर है – सच्चा, सच्चाई पर, दानी दान पर, जालिम जुल्म पर।
11- वक्त पर पहचाने जाते हैं – दोस्त वक्त पर, भाई जरूरत पर, धैर्यवान कठिनाई पर।

तेज कुमार श्रीवास्तव

न्याय

ईश्वर के यहाँ न्याय है, अन्याय नहीं है।
उसकी पकड़ से बचने का उपाय नहीं है।।
ईश्वर के यहाँ न्याय है, पक्षपात नहीं है।
क्योंकि उस निराकार की कोई जात नहीं है।।
ईश्वर ही सबका मालिक है, इंसान नहीं है।
हिन्दू, सिख, जैनी, लाला या मुसलमान नहीं
ह । ।

कर लो भजन प्रभु का जो काम आयेगा।
छूटेंगे जब बंधन, मगर वह साथ जायेगा।।
'संजू' कहे संसार की मत आस कीजिए।
सच्चा प्रभु का नाम है विश्वास कीजिए।।

सूक्ति

1– हमारे सभी सम्बन्ध पिछले कर्मों के आधार पर होते हैं।
2– जिसने अहंकार त्याग दिया वह भवसागर से तर गया।
3– चिन्ता जीवन की दुश्मन है।
4– भय से रोग बढ़ता है।
5– असंभव शब्द मूर्खों के शब्दकोष में होता है।

– आनन्द कुमार श्रीवास्तव 'संजू'
सराय हरखू

राम की महिमा

राम नाम सब जग में प्यारा,
ज्यों मिल्या सो पार उतर गये,
रे नर मूरख अबहू न चेता,
ओढ़ तू राम नाम चदरिया,
उस चादर को डाल के तन मन में,
इस भवसागर के पार उतर तू।
राम चदरिया महिमा अति प्यारी,
सुर नर मुनि– जब ओढ़े चदरिया,
प्रभु कृपा संग सब पार उतर गये।
वोहि चादरिया जब बाल्मीकि ओढ़े,
रामायण लिख यश महिमा पाये।
तुलसी ने जब ओढ़ि चदरिया,
'मानस' लिख बन गए काव्य शिरोमणि,
इतनी महिमा राम नाम की,
तू क्यों अब पछताये रे मन,
झट–पट बांध गले में राम ,
अपना जीवन सफल बना तू,
भवसागर के पार उतर तू,
मोह–माया का बन्धन तोड़ कर,
मन लगाकर प्रभु चरणों पर,
भक्ति रस का प्याला पीकर
सारे जग में नाम करा जा।
भवसागर के पार उतर जा।

मुक्ता सिन्हा

मण्डल का 76वां वर्ष

जीवन के हर कदम पर रास्ता बताता है धर्ममण्डल।
खुशी हो या गम हो, सदैव लहराता है धर्म मंण्डल।।
ग्राम सरायहरखू (मानसनगर) मे सुशोभित है धर्ममंण्डल।
76 साल का हो गया है आज आप सबका धर्ममण्डल।
ज्ञान का मोती देता है, सदैव आप का धर्ममंण्डल।।
अज्ञानता को दूर कर, मिलन कराता धर्ममण्डल।
ज्ञान का लहराता सागर है, हमारा आप का धर्ममंण्डल।।

रितेश कुमार श्रीवास्तव " गोलूदादा"
सुत श्री अजय कुमार श्रीवास्तव "जयसिंह" (सदस्य)
श्री सीताराम धर्ममंण्डल (मानसनगर), सरायहरखू, जौनपुर।

मेरे परम आराध्य हनुमान जी

श्री हनुमान मेरे परम आराध्य है– क्या कहूं कुछ कहने को नही बनता। वे मेरे रोम–रोम में विराजित है, मेरी आत्मा के अंश हैं और जो मैं कहूंगा वह भी तो वे ही कह रहे होंगे। प्रबल पराक्रम के धनी, अंजनीनंदन, पवनसुत, राघवदूत, हनुमान सहस्त्राब्दियों से भारत के जनमास पर छाए हुए हैं। वे पराक्रमी हैं। अतुलित बल के धाम हैं लेकिन वे अत्यन्त विनीत हैं अपने पराक्रम का अभिमान उनमें कभी नहीं हुआ। उन्हें तो उनके अपने पराक्रम की याद दिलानी पड़ती है– राम काज हेतु, उन्हें उनके बल का स्मरण कराना पड़ता हैं जामवन्त के बचन सुहाई, सुन रघुवीर हरिष उर लाई। जब राम राज के उपयुक्त श्री हनुमान को स्वीकार किया तो रघुवीर का हृदय उल्लासित हो उठा मानोउन्हें सीता की सुध लाने वाला महान पराक्रमी योद्धा मिल गया है।

वे परम ज्ञानी है, मनीषी हैं पर वे अपने गुणों का स्वयं कभी बखान नही करते। अभिमान रहित विनय की मूर्ति श्री हनुमान से जब उनका परिचय पूछा गयातो उन्होंने सहज भाव से जो उत्तर दिया उसे वाल्मीकि ने इस तरह कहा है– मत्यः प्रत्यवरः कश्चित्रास्ति सुग्रीव सन्निधौ। अर्थात् सुग्रीव के दरबार में मैं सबसे नीचे ओहदे पर हूं, अन्य सभी मुझसे ऊचे पद पर है। अतः जो हनुमान को जानना चाहते है, वे उन्हें इसी तरह जाने की वे नियम, त्याग और पराक्रम– परमार्थ की मूर्ति है। अपना सारा जीवन, सारा पराक्रम, सारी बुद्धि वे अपनी स्वामी की सेवार्थ समर्पित कर सेवा के आदर्श और समर्पण की मूर्ति बन जाते हैं। अतः वे अनुकरणीय हैं। वे निःस्वार्थ कर्म के प्रतिमान हैं तभी तो उनके प्रतिमान स्वामी भगवान् राम ने द्रवित होकर कहा

आंजनेय, मैं सैकड़ों जन्म लेकर भी तुम्हारे उपकारों का बदला नहीं चुका सकता। तुम्हारे उपकारों का यह ऋण सदा वहन करूंगा।

हनुमान का भगवान से साक्षात्कार कुछ ऐसी स्थिति थी। जिसमें हनुमान के जीवन में एक अद्भुद क्रांति हो जाती हैं। उनके अन्दर की प्रसुप्त ऊर्जा अनन्त रूपों में प्रस्फुटित हो जाती हैं उन्हें अपने लक्ष्य का मान हो जाता हैं ओर वे अपना सम्पूर्ण जीवन श्रीराम के कार्य हेतु समर्पित कर देते है, उसके बाद तो उनके माध्यम से एक से एक बढ़कर अत्यंत आश्चर्यजनक और असम्भव लगने वाले काम भी सहज सम्पन्न हो जाते हैं।

प्रभु श्रीराम का धर्म संस्थापन महान् उद्देश्य रहा है। इस उद्देश्य में हनुमान बड़ी कुशलता, अनुभव ओर सम्पूर्ण क्षमता से समर्पित रहते हैं इस समर्पण में श्री राम की कृपादृष्टि ही प्रमुख है जो श्री हनुमान की प्रसुप्त ऊर्जा का जागृत कर एक दिशा देती है– तुलसी राम सुदीप्ति निबल होत बलवान। श्री राम की कृपा केन्द्र में है,उनकी कृपा दृष्टि से निर्बल भी बलवान होकर इस बिखरे जगत को संवारने में सक्षम बन जाता है।

मैं सदैव उनके निकट रहूँ– मेरी कामना है। इसीलिए कौशल्य देवी धर्मार्थ ट्रस्ट के माध्यम से कानोता ग्राम जयपुर में परमपूजय श्री छुट्टन जी महाराज के गायत्री परिसर में मेरे आराध्य श्री पंचमुखी हनुमान अपने भव्य मंदिर में विराजित है– वे मेरे निकट हैं। मैं उनके चरणों में, वे मुझे संवारे हुए हैं मेरी तो सदैव विनय है–

जय हनुमान संत हितकारी, सुनि लीजे प्रभु विनय हमारी।
जन के काज विलंब न कीजे, आतुर दौरि महासुख दीजे।।

मै सभी जन में हूँ सभी जन मुझमे हैं– जो भक्त हैं उनके काज के लिए श्री हनुमान जी से मेरी सदैव विनती है– प्रभु जन के काज के लिए देर मत करना। व

– कु० अनुष्का सिन्हा
एस–एस–756, सेक्टर–एन, अलीगंज लखनऊ।

अतिवाद से बचें, 'सक्यक' जीवनशैली अपनाएँ

आधुनिक युग की आपाधापी का प्रभाव एवं परिणाम है– कई प्रकार की बीमारियाँ। लाइफ स्टाइल डिस ऑर्डर, मेंटल डिआर्डर आदि विकृतियाँ इसी की परिणति हैं। शारीरिक एवं मानसिक सामर्थ्य की कमी या अधिकता से ही ये विकार एवं विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं। सामर्थ्य कम हो और काम की अधिकता हो तो शरीर एवं मन इस दबाव को सहन नहीं कर पाते हैं। लंबे समय तक यदि यह दबाव बना रहे तो ये विकृतियाँ घर कर जाती हैं। जीवन शैली से असंयम एवं अनियमिता आने पर भी ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। आधुनिक युग की इस महामारी से बच्चे से लेकर जवान बूढे सभी आक्रांत हैं।

सामर्थ्य के अनुरूप ठीक–ठीक कार्य करना सभी विकृतियों से मुक्ति का प्रमख कारण है। भगवान बुद्ध ने इसे सक्यक शबद से निरूपित किया है। सक्यक अर्थात् ठीक–ठाक। जितनी सामर्थ्य है, उतना ही कार्य जितना हम कर सकते हैं उतना ही कार्य करना। गीता में इसे मुक्त कहा गया है। यह भी सक्यक के अर्थ के समान प्रतीत होता है। सभी योगी कर्मयुक्त होते हैं। अर्थात सामर्थ्य के अनुरूप ही कार्यों का निर्वहन करते है कि अपनी सामर्थ्य के ७म कार्य करना तमोगुणी प्रवृति का प्रतीक है, जबकि इससे अधिक कार्य का दबाव झेलना रजोगुणी प्रवृति कहलाती है। तमोगुणी कार्य से विमुख हो जाता है, जिसके कारण उसे आलस्य और प्रमाद घेर लेते हैं। वह गहरी उदासी में चला जाता है। रजोगुणी कार्य की अधिकता के कारण अत्यधिक सक्रिय हो जाता है। इसे अपने बारे में सोचने–करने का समय ही नहीं मिल पाता है।

अपने अनुरूप एवं अनुकूल ठीक–ठीक कार्य का संपादन सात्विकता का गुण है। जितनी क्षमता है उतना ही कार्य करना, न उससे अधिक ओर न उससे कम। सतोगुणी व्यक्ति दो अतियों के बीच संतुलन बनाता हे। संतुलन के कारण ही वह सभी कार्यों को समय पर मनोयोग पूर्वक सम्पन्न करता है। इससे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का ह्रास नहीं होता है, बल्कि गुणात्मक विकास होता है। सतोगुणी मनचाहा काम करता है और यह भी सच है कि वह हर कार्य को मनोनुकूल बना लेता हैं मनचाहा काम वह है, जिससे लक्ष्य की देहरी तक पहुचने में आसानी होती है और यह उसका सहयोगी होता है। यह ऐसा कार्य है, जिससे अपने स्वर्णिम भाग्य के निर्माण एवं निर्धारण करने में सहायता मिलती हैं सतोगुणी काम का खेल मानकर करता हैं इस मान्यतासे यह केवल कार्य के वर्तमान स्वरूप पर अच्छा करने के लिए सोचता है, उसके परिणाम का अच्छा–बुरा प्रभाव उसको प्रभावित करता है। तमोगुणी काम को करने से पूर्व ही नकारात्मकता से भर जाता है और भावी समस्याओं के प्रति भयग्रस्त होकर काम ही नहीं करता।

सतोगुणी कार्य की गंभीरता को जानता है। वह जानता है कि जीवन का रहस्य संघर्षों से भागना नहीं, वरन उनसे डटकर मुकाबला करना हैं। आसान विकल्प को चुनने और बिना संघर्ष के जीने की बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ती है और यह कीमत होती है– अपने लक्ष्य, उद्देश्य एवं कल्पना को कभी भी उपलब्ध न कर पाने की। निश्चय ही यह बड़ी भारी कीमत है, जिसे निराश हताश व्यक्ति चुकाते हैं। सतोगुणी का स्वास्थ्य अच्छा रहता है क्योंकि वह जीवन से हताश–निराश नहीं होता है। उसका मानसिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार का स्वास्थ्य ठीक होता है। व्यतिक्रम तो अधिक महात्वाकांक्षी एवं कुंठित होता है, इन दोनो तरह के व्यक्तियों का शारीरिक स्वास्थ एवं मानसिक संतुलन गडबड रहता है और इन्हें विभिन्न प्रकार के रोग शोक घेरे रहते हैं। जीवन शैली ठीक न रहने के कारण उनमें लाइफ स्टाइल डिआर्डर जैसे रोग पनपते है।

तमोगुणी में जीवन के प्रति सघन निराशा– हताशा एवं कुंठा झलकती है, जबकि रजोगुणी प्रवृति का व्यक्ति अति महात्वाकांक्षी एवं आवश्यकता से अधिक सक्रिय रहता है। एक हाइपोएक्टिव होता है तो दूसरा हाइपरएक्टिव होता है। हाइपोएक्टिव व्यक्ति डिप्रेशन आदि रोगों से आक्रांत होता है। तो हाइपर एक्टिव व्यक्ति स्ट्रेस, एंक्जाइटी, मेंनिया आदि विकारों से घिर जाता है।

डच फिजीशियन जे.जे. ग्रोन ने एसे दोनो प्रकार के व्यक्तियों का अध्ययन किया। ग्रोन के अनुसार काम से भागने वाले व्यक्ति कामचोर एवं आलसी होते है।

प्रख्यात मनोवैज्ञानिक कोबासा के अनुसार अति महत्वाकांक्षी व्यक्ति का मन चंचल, अस्थिर तथा शरीर कार्य के दबाव से थका हुआ रहता है। ये किसी भी कार्य को अतिशीघ्र कर लेना चाहते है, ताकि दूसरे कार्य को भी कर सकें।

काम करना चाहिए, कठोर काम करना चाहिये, परन्तु अति कभी नहीं करनी चाहिये। काम संतुलित ढंग से करना चाहिये। नियत समय में संपन्न कार्य अत्यधिक प्रसन्नता देता है और कार्य के प्रति उत्साह जगाता है। संतुलित, समयपूर्वक एवं योजनाबद्ध ढंग से किया गया कार्य अनेक बीमारियों से निजात दिला सकता है। कार्य का दबाव ही ऐसे रोगो का कारण हैं अतः इससे बचना चाहिये ताकि शारीरिक एवे मानसिक स्वास्थ्य बरकरार रह सकें। व

— श्रीमती नमिता श्रीवास्तव
रतनलाल नगर, कानपुर।

प्रेरणा गीत

लहू का रंग एक है
लहू का रंग एक है, अमीर क्या, गरीब क्या
बने हैं एक खाक से, तो दूर क्या करीब क्या
लहू का रंग एक है।।
1— वहीं है तन वही है जान, कब तलक छुपाओगे,
पहन के रेशमी लिबास कि तुम बदल ना जाओगे,
सभी हैं एक जाति हम, स्वर्ण क्या, अवर्ण क्या।
लहू का रंग एक है।।
2— गरीब है तो इसलिये कि, तुम अमीर हो सके,
एक बादशाह हुआ तो, सौ फकीर हो गये,
खता है सब समाज की, भले बुरे नसीब क्या।
लहू का रंग एक है।।
3— जो एक हैं तो फिर न क्यों दिलों का दर्द बांट लें,
जिगर की प्यास बांट लें, लबों का प्यार बांट लें,
लगा लो सबको तुम गले हबीब क्या, गरीब क्या।
लहू का रंग एक है।।
4— कोई जने हैं मर्द, तो कोई जनी हैं औरतें
शरीर से भले ही फर्क, रूह सबकी एक है,
एक है जब हम सभी, विषमता की वजह क्या।
लहू का रंग एक है।।

नीलम श्रीवास्तव
विशाल खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

भजन

1— काहें न लेत, खबरिया हो।
दशरथ जी के लाल।
कब से खड़े हम, विनती करत है।।
2— कब से खड़े हम, अर्ज करत है।
काहे न सुनत, अरजिया हो।
दशरथ जी जी के लाल।।
3— जाते समय बन गइले अकेलवाँ।
काहेन संगवा, लियाय गइल।
दशरथ जी के लाल।।
4— काहे न लेत, खबरीया हो।
चौदह वरष से, आंस लगाये।
5— कब देव दरसनवाँ हो।
दशरथ जी के लाल।।
6— अयोध्या नगरीया क, सुनि बा महलिया।
कब अइब अपने, महलिया हो।
दशरथ जी के लाल।।
काहे न लेत, खबरीया हो।
दशरथ जी के लाल।।

कु0 जैकी
पुत्री श्री अशोक कुमार 'बिपिन'

अच्छे विचार

हमारा जीवन भगवान की अद्भुत सृष्टि है। परमात्मा ने हमारे जीवन को कर्मभूमि के रूप में विकसित किया है। इसलिए जीवन की सफलता और असफलता कर्म पर निर्भर करती है। भगवान किसी को बुरा या अच्छा नहीं बनाता। जन्मकाल में अच्छे व बुरे की पहचान करना संभव नहीं है। मनुष्य केवल अपना प्रारब्ध लेकर आता है, लेकिन आगे चलकर जिन विचारों, वातावरण और परिवेशों में वह पलता है, वैसा ही व्यक्तित्व उसमें निर्मित होने लगता है। प्रातःकाल का समय बड़ा महत्वपूर्ण होता है। जैसा विचार वैसा जीवन।

— शिव कुमार सिन्हा (पप्पू)
पुत्र स्व० सतीश चन्द्र श्रीवास्तव

श्री रामलीला-उद्भव एवं विकास

भारत एक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों वाला देश रहा है, जिसमें परम्पराएं व लोक कलायें स्वतः ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचरित होती रही हैं, किन्तु बदलते परिवेश में आज बहुत सी परम्पराओं एवं लोक कलाओं का प्रचलन न केवल न्यून हो गया है बल्कि बहुत सी लोककलायें तो लुप्तप्राय हैं। राम लीला एक ऐसी ही लोककला है, जो भारतीय संस्कृति केउन्नायक एवं मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम चन्द्र के जीवन से सम्बन्धित झाकियों के रूप में खेली व प्रदर्शित की जाती रही हैं। यद्यपि आज इसके प्रचलन के दृष्टांत कम होते जा रहे हैं, किन्तु अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि रामलीला एक अत्यन्त प्राचीन लोककला है एवं देश विदेश में इसके उदाहरण उपलब्ध रहे हैं।

भारतीय परम्परा के सभी दार्शनिक विचारों के मूल–प्रस्थान उपनिषद ही माने जाते हैं। उपनिषद के वाक्यों को सूत्र के रूप में व्यक्त करने का कार्य बादरायण ने अपने ब्रहमसूत्र में किया था जिसे शारीरिक सूत्र के नाम से भी जाना जाता है।

ब्रहमसूत्रकार भगवान बादरायण ने बताया है– लोकवत्तु लीलाकैवल्यम अर्थात् समग्र लोक–लोकान्तरों की सृष्टिमात्र परमात्मा की लीला हैं। स्वयं के संकल्प से ही वे एक होते हुए बहुत रूपों में व्यक्त हो लीला विलास करते हैं। लीला के तीन प्रमुख भेद हैं। अक्षर लीला, नित्य लीला, एवं व्यावहार इनमें से सगुण साकार प्रभु श्रीराम की लोक लीला उनकी व्यावहारिक लीला के नाम से जानी जाती है।

भगवान श्रीराम की व्यावहारिक लीला–श्रीरामलीला का प्रथम उत्सव प्राप्त होता है शिवसंहिता के पंचम पटल मे। वहां वर्णन आता है कि एक बार ब्रहमऋर्षि अगस्त्य अनेक ऋषि–मुनियों समेत तीर्थों में भ्रमण करते हुए गन्धमादन पर्वत पर पहुचे। गन्धमादन के रम्य कदलीवन के मनोरम वातावरण को श्रीराम भजन के अनुकूल देख वे ऋषियों संहित वहीं ठहर गये।

ऋषिगण वहां संकीर्तन करने लगे। भगवन्नाम की मधुर ध्वनि से आकृष्ट होकर पवन नन्दन श्री हनुमान जी वहां प्रकट हो गये। अगस्त्यजी द्वारा परिचय पूछने पर उन्होंने कहा–

प्रभु के लीलासंवरण के पश्चात उन्होंने मेरे लिये इसी कदलीवन में निवासकी आज्ञा दी। कालखेप के लिये प्रभु की आज्ञा से हमे पांच सौ किन्नर कुमारियां इच्छावपु षधौरिणी प्राप्त हुई और लीलानुकरण का आदेश हुआ। वे किन्नरियां श्रीरामचयरित सुनाती और लीलाभिनय करती हैं। श्रीरामचरित के गीत मुझे श्रुतियों से भी अधिक प्रिय हैं। मैं बहमचारी होते हुए भी इसीलिये इन किन्नर कन्याओं के मध्य लीलानुभूति में आत्म–विस्मृत उन्मत्त प्रमत्त हरता हू। उनके द्वारा अभिनीत रामचरित मुझे प्रत्यक्षवत सुख प्रदान करता है। श्री हनुमान जी के मुख से यह विवरण सुनकर श्री अगस्त्यजी ने इस लीला के दर्शन कराने की प्रार्थना की श्री हनुमान जी ने रात्रि मे दिव्य लीला का दर्शन कराया और स्वयं भी उस लीला में भाग लिया। महर्षि अगस्त्य छःमाह तक वहां रह गये और लीलास्वाद में निमग्न रहे।

भवभूति के उत्तरामचरित के अन्तिम अंक में महर्षि बाल्मीकि द्वारा करवाये गये श्रीराम लीला अभिनय का भी उल्लेख मिलता है। श्रीराम और सीता के मिलने को सम्भव बनाने के लिये नाटककार ने प्रभावशाली युक्ति का प्रयोग किया है।

आनन्दरामायण में भगवान श्रीराम की लीलाओं का अलौकिक महत्व प्रतिपादित हुआ है, किन्तु यह जनश्रुति प्रसिद्ध है कि हिन्दीभाषी प्रान्तों में जो रामलीला प्रचलित है, उसके प्रवर्तक स्वयं गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी हैं। उन्होंने अपने ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस के आधार पर वाराणसी, अयोध्या एवं चित्रकुट में रामलीलाएं प्रारम्भ की। गोस्वामिपाद ने रामराज्या भिषेक की झांकी शरत पूर्णिमा के दिन अस्सीघाट पर वाराणसी में प्रस्तुत की थी।

रामनगर की रामलीला को काशी नरेश का पूर्ण पश्रय प्राप्त हुआ और अयोध्या मिथिला तथा चित्रकुट की लीलाएं पृथक–२ स्थलों पर अभिनीत हुई, जो अधावधि प्रचलित हैं जिनमें अनेक चमत्कार समय–समय पर देखे गये। संचालित रामलीला अपनी भाव–प्रवणता के लिये विख्यात है।

रामलीला का प्रचार–प्रसार यद्यपि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में अधिक है, पर प्रकारान्तर से इसने भाषा की सीमा तोड़कर अन्य प्रान्तों में भी अपना प्रभाव दिखलाया है। बंगाल में कृत्तिवासरामायण के आधार पर रामलीला होती है,

जो जात्रा वह लाती हैं इसी प्रकार असमिया में शंकरदेवरचित श्रीरामविजय नाटक रामलीला का ही एक प्रकार है। रामकथा के आधार पर संस्कृत में प्रतिमानाटकम् उत्तर रामचरितम् महानाटक हनुमन्नाटक लिखे और अभिनीत किये गये दक्षिण भारत में महर्षि कम्बन् ने तमिल भाषा में कम्बरामायण की रचना की जो लोकप्रियता के साथ–साथ अभिनीत भी हुई।

इतना ही नहीं रामलीला का विस्तार भारत की सीमाओं के पार विदेशों में भी है। यह बात अलग है कि वहां की रामलीलाओं में वहां के स्थानीय रंगों का अधिक समावेश है। राम वहां भगवान् नहीं अपितु चरित्रनायक हैं, परन्तु उनके प्रति निष्ठा में कहीं कमी नहीं है। दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में रामलीला की लोकप्रियता भारत जैसी है। थाईलैण्ड में तो अयोध्या और लवपुरी नाम वाले नगर भी हैं, यहां तक कि वहां के उन्नीसवीं सदी के शासक अपने नाम से पहले राम शब्द जोड़ते थे। वहां की राजधानी बैंकाक के मंदिर में रामलीला के चित्र अंकित हैं तथा संग्रहालय में श्री राम की अनेक मूर्तियां भी हैं। कम्बोडिया के प्रसिद्ध अंकोरवाट–मन्दिर में रामलीला के दृश्य आज भी चित्रित हैं। सैकड़ों वर्ष पूर्व वहां के राजा जयवमन् ने रामलीला का राजीवन तथा जनसामान्य में अभिनय करवा एवं कथावाचकों के माध्यम से रामकथा का सम्पूर्ण देश में प्रचार–प्रसार किया। इसी प्रकार लाओस में भी कुछ मन्दिरों में रामलीला के दृश्य उत्कीर्ण है। यहां राम से सम्बन्धित नृत्य नाटक राजमहलों से लेकर साधारण स्थलों पर भी खेले जाते हैं। मलेशिया यद्यपि इसलाम धर्मावलम्बी देश है, परन्तु वहां रामलीला की लोकप्रियता का यह आलम है कि लोग सड़कों के किनारे इसका आयोजन करते हैं और मुखौटे लगाकर अभिनय करते हैं। इसी प्रकार इण्डोनिशया भी मुसलिम राष्ट्र है, पर वहां भी राम के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति–भावना भारत से किसी भी प्रकार कम नहीं है। वहां के हिन्दू बहुल बालीद्वीप में तो रामलीला होती है, पर मुसलिम बहुल जावाद्वीप के जोगा जोकार्ता की रामलीला और राम सम्बन्धी नृत्य नाटक विश्व भर में प्रसिद्ध है। भारत के पड़ोसी राज्य वर्मा में भी रामलीला लोकप्रिय है, यह राम लीला 'यामाप्वे' कहलाती है। इसका प्रारम्भ सन् ७७६८ ई० में हुआ। श्री लंका में रामकथा पर आधारित नाटकों का प्रचलन है जिसका श्रेय प्रसिद्ध सिंहली नाटककार जान डीसिल्वा को जाता है। बहुत से देश में तो रामलीला प्रशिक्षण के लिए बाकायदा नाट्यशाखाएं बनी हुई हैं जहां रामायण केसंगीत और नृत्य की नियमित शिक्षा, दी जाती है। इतना ही नहीं सुदूर सोवियत रूस में भी रामकथा पर आधारित रामलीलाएं, नाटक आदि अभिनीत किये जाते हैं।

इस प्रकार यह रामलीला भगवान् श्रीराम के समान ही अनादि है, अपने व्यापक स्वरूप में यह जन–जन के मन को को आनन्दित ओर रामभक्ति से आपलावित करती है। श्रीराम कथा ही इस रामलीला का उपजीव्य है, जिसका वेशिष्ट्य है कि यह तत्वज्ञों रामभक्तों एवं विद्वज्जनों के मन को शान्ति देती है ओर सर्वमान्य के मन का रंजन करती है। ऐसी स्थिति में वर्तमान पीढ़ी का यह दायित्व हो जाता है कि वे केवल "रामलीला" के प्रदर्शन को पल्लवित, पुष्पित एवं उत्साहित करें, बल्कि भावी पीढ़ी के मनोभावों में इसे संचारित करें, जिससे कि इस "लोककला" को अनन्तर काल तक जीवित रखा जा सके। व

– विमल कृष्ण श्रीवास्तव
सदस्य, सलाहाकार समिति
श्री सीताराम धर्म मण्डल, सराय हरखू जौनपुर।

ये तीन बातें

1– तीन का सदैव सम्मान करना चाहिए– माता, पिता, और गुरू।
2– इन तीनों को कभी भूलना नहीं चाहिए– कर्ज,फर्ज और मर्ज।
3– इन तीनों पर दया करनी चाहिए– भूखे, बालक और पागल।
4– ये तीन किसी का इन्तजार नहीं करते– समय, मौत और ग्राहक
5– इन तीनों में मन लगाना चाहिए– विद्या, ईश्वर और मेहनत।
6– ये तीन वस्तुयें आदमी को महान बनाती है– ज्ञान, आचरण और ईमानदारी।
7– तीन चीजें कभी वापस नहीं होती– तीर कमान से, बात जबान से और प्राण शरीर से।

चन्द्र प्रकाश श्री वास्तव (टीटू) एवं चिंटू

सीता स्वयंबर

ओढ़ के ओढ़निया सिया, घुमय चारो ओरिया
१– सिया बहुरीया बनके, केकरे, गलें में डाले हार
सिया बहुरीया बन के
देख कर सुरतिया, राम के, मोंहाय गइलिन
बनवां में खोजय, सिया, बगइचा में खोजय लागिन

२– खोजय लागिन, जनक फुलिवरीया सिया बहुरीया बन के
केकरा गले में डाले हार
बरह बरष की लक्ष्मण के उमरीया बा

३– सोलहय बरष श्री राम, सिया हो सोचय लागेन
केकरा गले में डाले हार सिया हो सोचय लागने
ओढ़ के ओढनिया सिया, घुमय चारो ओरिया
सिया बहुरीया बन के
केकरा के सो है रामा, मौरा और भुकुटवा

४– केकरा के सो है, धनुवा वान सिया हो सोचय लागेन
श्री राम के, सो है रामा, मौरा और भकुटवां
लक्ष्मण के सो है, धनुवा वान, सिया की सोचिय लागेन
श्री राम गले में डाले हार, सिया बहुरीया बनके

५– लिखते विपिन बिहारी मानल कहनवां
सेवा करब, प्रभु कब देब दरसनवां
ओढे के ओढनियां सिया घुमय चारों ओरिया
सिया बहुरीय बनके

अशोक कुमार श्रीवास्तव

हमारा संकल्प

है शौक यही अरमान यही,
हमें करके कुछ दिखलाना है।
मरने वाली दुनिया में,
हमें अमरों में नाम लिखवाना है।
जो लोग गरीब भिखारी हैं,
जिन पर ना किसी की छाया है
हम उनको गले लगाएंगे,
जो लोग पड़े हैं अंधेरों में
हम उनको सुखी बनायेंगे
अपना नहीं नजर से।
उनके घर के हर कोने में,
उदयन का दीप जलाएंगे।
जो लोग हारकर बैठे हैं
उम्मीद मारकर बैठे हैं।
हम उनके बुझे दिमागों में,
एक नया उत्साह जगाएंगें।
मत रोको आगे बढने दो,
हम देश केरखवाले हैं।
हम अपनी मातृभूम के लिए,
अपना सवर्ग लुटाएंगें।
हम उन वीरों के बच्चे हैं
जो वादों के पक्के सच्चे हैं।
हमें इनका मान बढाना है।
हमें कुछ करके जरूर दिखाना है

शैफाली श्रीवास्तव

प्रेरणाप्रदवाक्य

लक्ष्य न ओझल होने पाये, कदम मिलाकर चल,
सफलता तेरी कदम चूमेगी, आज नही तो कल!

1– आशा सर्वोत्तम प्रकाश है ओर निराशाघोर अन्धकार है।
2– सत्कर्म ही ईश्वर की सबसे बडी पूजा है।
3– अदालत ओर पुलिस से बच सकते है, परमेश्वर से नही।
4– धनवान नही चरित्रवान सुख पाते है।
5– बच्चा माता–पिता के व्यक्तित्व और स्वभाव का संगम है।

कु0 नूतम श्रीवास्तव (गौरी)
सरायहरखू (मानस नगर), जौनपुर।

मण्डल के सदस्यों द्वारा अभिनीत प्रमुख भूमिकाएँ

क्र.सं.	नाम (सर्व श्री)	भूमिकाएँ
1.	मदन स्वरूप	कौशल्या, कैकेई
2.	कृष्ण मोहन (मुन्ना)	केवट, हनुमान
3.	विमल कृष्ण	दशरथ, जनक, कुम्भकरण, बालि
4.	हरीश चन्द्र श्रीवास्तव	दुष्ट राजा, सुग्रीव
5.	सोहन लाल	विश्वामित्र, खरदूषण
6.	सर्वदानन्द	कैकेई, सूपणखा
7.	विष्णु प्रकाश 'गिरीश'	राम, सीता, कैकेई
8.	सत्य प्रकरा 'रमेश'	राम, कैकेई, भरत
9.	ज्ञान प्रकाश 'सुरेश'	सीता, अहिल्या
10.	अनुपम वर्मा 'विवेक'	राम, शत्रुहन
11.	मनोज कुमार	रावण, लक्ष्मण, राजकुमार, तारा, मेघनाद
12.	अनुज कुमार	दशरथ, सीता, तारा, लक्ष्मण, मेघनाद
13.	डा0 अम्बुज श्रीवास्तव	लक्ष्मण, हनुमान, जनक, दशरथ, मेघनाद, वाणासुर, विभीषण
14.	संजय कुमार श्रीवास्तव	अग्नि, शत्रुहन, सखी, छोटा अंगद
15.	तरुण कुमार श्रीवास्तव	सीता, तारा
16.	कृष्ण कुमार 'लल्लू'	राम, सीता, दशरथ
17.	गणेश जी	कौशल्या, सीता
18.	शिव कुमार	जामवन्त
19.	जितेन्द्र कुमार 'गुड्डू'	कुम्भकरण, बालि, बंदी, राम, अग्नि, अहिल्या, विश्वमोहिनी
20.	मनमथ कुमार	राम, भरत, विभीषण
21.	कृष्ण कुमार	दशरथ, सूपणखा, हनुमान, भरत
22.	दीपक	हनुमान, सुग्रीव, वाणासुर
23.	कृष्ण चन्द्र 'बचई बाबू'	बृह्मा, सीता, लक्ष्मण
24.	पवन कमार	वशिष्ठ, मारीच, ताड़का, कौशल्या
25.	जय सिंह	मेघनाद, परशुराम, राजकुमार
27.	दयानन्द सिन्हा	विभीषण, कौशल्या, सुमित्रा
28.	देवेन्द्र कुमार 'अतुल'	बज्रदन्त, शतानन्द, शत्रुहन
29.	इकबाल बहादुर 'गुड्डू'	सुबाहु, राजकुमार
30.	कौशल कुमार 'मनूजी'	साधु राजा, इन्द्र, कैकेई
31.	श्यामजी सिन्हा 'अंजनी'	खरदूषण, अंगद, मोहन, अहिल्या, लक्ष्मण, सूपणखा
32.	राजन जी	राम, विष्णु, भरत
33.	केशव कुमार 'बुलबुल'	बज्रदन्त, अहिल्या, सखी

क्र.सं.	नाम (सर्व श्री)	भूमिकाएँ
34.	बिपिन जी	भरत, सखी, साधु रावण
35.	मुन्नू जी	ताड़का, जटायू, रावण
36.	तेज प्रकाश	पृथ्वी
37.	टीटू	सखी, अप्सरा
38.	के0पी0 श्रीवास्तव	कौशल्या, सीता, सूपणखा, खरदूषण
39.	डा0 राजेश्वर प्रसाद 'बचऊ'	जामवन्त
40.	सुरेन्द्र कुमार 'लल्लू'	रावण, दशरथ, खरदूषण, भरत
41.	अरुण कुमार	दुष्ट राजा, सुग्रीव, सुमित्रा, राजकुमार
42.	बृजेश कुमार 'कुमकुम'	सुमन्त, जामवन्त
43.	विकास	ताड़का
44.	अमित	शत्रुहन
45.	नरेन्द्र नाथ	ताड़का, त्रिजटा
46.	श्याम बाबू	जामवन्त
47.	ज्ञानेन्द्र सिन्हा	सीता, लक्ष्मण, मेघनाद, वाणासुर, परशुराम
48.	बांकेन्द्र सिन्हा	शबरी, मन्थरा, धोंधुआ राजा, श्रंगी ऋषि
49.	कृष्ण कुमार सिन्हा 'बुल्लू'	अत्रिमुनि, विश्वामित्र, सीता, भरत, सूपणखा, नारद
50.	बच्चू जी	सीता, सखी
51.	बबलू पुत्र श्री बांकेन्द्र सिन्हा	नारद, शबरी, मालिन, धोंधुआ राज, भरत
52.	गोरा	भरत
53.	छोरा	लक्ष्मण
54.	मुन्ना जी पुत्र श्री ज्ञानेन्द्र सिन्हा	भरत, अग्नि, सखी
55.	अरुण कुमार सिन्हा	सुमन्त, मारीच
56.	गौरव	सीता, सखी, विश्वमोहिनी
57.	वैभव	गौरी
58.	राजेन्द्र नाथ 'छोटे बाबू'	वाणासुर, मारीच, खरदूषण, सुखेण
59.	मुरारी	राजकुमार
60.	राम जी	शंकर, निषाद
61.	प्रेमचन्द्र	माली, ताड़का, सुमित्रा, धूम्राक्ष
62.	अनिल कुमार 'गुड्डू'	लक्ष्मण, धूम्राक्ष, कौशल्या, विष्णु
63.	सुनील कुमार 'लाडू'	बालि
64.	शिवम	नील
65.	शुभम	नील, एक बन्दर
66.	बांके लाल	जामवन्त
67.	जगन्नाथ	भरत, कौशल्या
68.	सुभाष जी	लक्ष्मण, शत्रुहन

क्र.सं.	नाम (सर्व श्री)	भूमिकाएँ
69.	विक्रम नरेन्द्र	राम, विष्णु
70.	वैभव नरेन्द्र	शत्रुहन
71.	पुनीत	मन्दोदरी, राजकुमार
72.	पप्पू जी	सखी, शतानन्द
73.	राजकुमार 'गुड्डू'	सुखेन, सखी
74.	विजय जी	राजकुमार
75.	सुभाष जी (सुपुत्र श्री केवला प्रसाद)	मदन, मन्दोदरी
76.	महन्त	सखी, मदन, मन्दोदरी
77.	पप्पू जी (पुत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद)	राम, शत्रुहन
78.	गिरीश जी (पुत्र श्री बचनू बाबू)	मदन, सुमित्रा, मन्दोदरी
79.	अजय कुमार	लक्ष्मण, सीता, सखी
80.	पुलकित	नारद, लक्ष्मण, सखी
81.	सतीश चन्द्र	साधू राजा, धर्म, धोंधुआ राजा, केवट
82.	रामचन्द्र 'भैया जी'	विष्णु, मुनादी वाला, झाडू वाला, भरत
83.	ईश्वर चन्द्र 'बच्चा जी'	सूपणखा, सीता, कैकेई
84.	सिद्धार्थ 'किशनू'	जाम्बवान
85.	विनोद कुमार श्रीवास्तव	सुग्रीव
86.	विनय	मेघनाद
87.	सुधीर	लक्ष्मण, सखी, अप्सरा
88.	डा0 अजय	लक्ष्मण, तारा
89.	पंकज	वीर सिंह, खडग सिंह
90.	चिन्टू	अग्नि
91.	राज आनन्द	शिष्य विश्वामित्र, राक्षस नं0 2
92.	रोहित आनन्द	छोटा अंगद
93.	संजू	सीता, सूपणखा
94.	किशन	कौशल्या, सखी
95.	अनूप	मदन
96.	गोलू	मुन्नी
97.	पप्पू	वशिष्ट
98.	विशाल	शतानन्द
99.	मयंक	किशोर
100.	अनुराग	विप्र, भरत, सुमित्रा, मदन
101.	सन्तोष	अनुसूया
102.	कुंवर जी	वज्रदन्त, त्रिजटा
103.	रतन	अप्सरा, सखी
104.	मोहन	वशिष्ट, राम

मण्डल के दिवंगत सदस्यों द्वारा अभिनीत महत्वपूर्ण भूमिकाएँ

क्र.सं.	नाम (सर्व श्री)	भूमिकाएँ
1.	पं0 बैनी प्रसाद सिन्हा 'प्रेमी'	रावण, केवट, परशुराम एवं धोंधुआ राजा
2.	राम दुलारे लाल	राम, विष्णु
3.	लखन जी	लक्ष्मण
4.	प्रेम बिहारी श्रीवास्तव	विश्वामित्र
5.	गोपी शंकर सिन्हा	जनक, अंगद
6.	खरपत्तू बाबू	सुमित्रा
7.	छोटे लाल	दशरथ, जनक
8.	हरीशचन्द्र वर्मा	रावण, वाणासुर
9.	सतीश चन्द्र श्रीवास्तव	सुग्रीव, वाणासुर, लक्ष्मण
10.	रघुनाथ प्रसाद	हनुमान, परशुराम
11.	विन्दवासिनी प्रसाद	परशुराम
12.	रामनाथ लाल	सुर्पुणखा, मंथरा
13.	प्रकाश नाथ श्रीवास्तव	मेघनाथ, शंकर
14.	गणेश प्रसाद	सुमन्त
15.	जयन्ती प्रसाद वर्मा	रावण
16.	गोविन्द प्रसाद सिन्हा	माली, बन्दी, बुड्ढा
17.	नन्हें	राम, भरत
18.	चन्द्रबली सिन्हा	वशिष्ठ
19.	कामता प्रसाद	धूमाक्ष
20.	अयोध्या प्रसाद	खरदूषण, मारीच, सुखेन
21.	मोहन (सुपुत्र श्री अयोध्या प्रसाद)	राम
22.	दीप नारायण लाल	चोपदार
23.	शैलेश कुमार	पृथ्वी
24.	शान्ति स्वरूप	ब्रजदन्त, शतानन्द
25.	वी0 कुमार लाल	दशरथ, कैकेई, रावण, हनुमान
26.	अच्युदानन्द 'मल्लू'	भरत, सीता
27.	काली शंकर	कैकेई
28.	प्रेमनाथ	लक्ष्मण

क्र.सं.	नाम (सर्व श्री)	भूमिकाएँ
29.	जगदीश प्रसाद	मन्दोदरी, कौशिल्या
30.	कृष्ण सहाय	नारद, राम, भरत, विभीषण
31.	रविन्द सहाय	राम, भरत, सीता, कुम्भकरण
32.	राधा कृष्ण	लक्ष्मण, सीता, कौशिल्या, सुमित्रा
33.	राम प्यारे लाल	धोंधुआ राजा, सूत्रधार, धूमराक्ष
34.	नरेन्द्र कुमार 'रामजी'	विश्वामित्र, परशुराम, नारद, केवट, हनुमान
35.	देवेन्द्र कुमार 'हीरा'	नारद, सुर्पूणखा
36.	सच्चिदानन्द 'बचनू'	राम, सीता
37.	सच्चिदानन्द 'गुड्डन'	कैकेई
38.	ओम प्रकाश 'सुशील'	लक्ष्मण, सीता, मेघनाद, परशुराम, अंगद
39.	स्वामी नाथ	राम, सीता, कुम्भकरण, ब्रह्म
40.	श्याम लाल 'समलू'	सुमित्रा
41.	मदन मोहन	कैकेई
42.	नरेन्द्र कुमार 'मुकुल जी'	लक्ष्मण, मेघनाद, वाणासुर, रावण, सुलोचना
43.	हरिमोहन 'लखन जी'	भरत
44.	कपिल जी	सीता, पृथ्वी, सखी
45.	बिजेन्द्र जी	सुमित्रा, त्रिजटा
46.	इन्द्रजीत सहाय 'टण्डन'	कौशल्या, खरदूषण
47.	वीरेन्द्र नाथ	वशिष्ठ, बालि, बन्दी, माली
48.	राधेश्याम	अंगद, सुमन्त, चोबदार, विश्वामित्र
49.	रामदेश लाल 'सोहन'	नारद, राम, भरत, सुखेन, मारीच, निषादराज
50.	डा0 केवला प्रसाद	सीता, झाड़ूवाला
51.	बजरंगी	चोपदार
52.	विनोद कुमार श्रीवास्तव	मन्दोदरी
53.	मनमोहन शंकर	राम, साधू राजा, विभीषण, विष्णु, सीता, सुलोचना?

मुक्तक जयन्ती समारोह समिति

श्री के0पी0 श्रीवास्तव – सभापति श्री कृष्ण कुमार सिन्हा – संयोजक

1. श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव – सदस्य
2. श्री कौशल कुमार सिन्हा – सदस्य
3. श्री श्याम जी सिन्हा – सदस्य
4. श्री अरुण कुमार – सदस्य
5. श्री सतीश चन्द्र श्रीवास्तव – सदस्य
6. श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव – सदस्य
7. डा0 अम्बुज श्रीवास्तव – सदस्य
8. श्री जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव – सदस्य
9. श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव – सदस्य

सलाहकार समिति

श्री दयानन्द सिन्हा
श्री राजेन्द्र नाथ श्रीवास्तव
श्री कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव
श्री मन्मथ कुमार श्रीवास्तव
श्री नरेन्द्र नाथ सिन्हा
श्री सोहन लाल श्रीवास्तव
श्री प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव
श्री ज्ञानेन्द्र सिन्हा
श्री विमल कृष्ण श्रीवास्तव
डा0 आर0पी0 सिन्हा
श्री कृष्ण कुमार श्रीवास्तव
श्री बांकेन्द्र सिन्हा
श्री सर्वदानन्द श्रीवास्तव
श्री शिव मोहन सिन्हा

कार्यकारिणी

1. श्री के0पी0 श्रीवास्तव – अध्यक्ष
2. श्री जैनेन्द्र सहाय सिन्हा – उपाध्यक्ष
3. श्री कौशल कुमार सिन्हा – मन्त्री
4. श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव – कोषाध्यक्ष
5. श्री सुनील कुमार 'लाडू जी' – संयुक्त मंत्री
6. श्री जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव – व्यवस्था मंत्री
7. श्री पवन कुमार श्रीवास्तव – प्रचार एवं प्रसार मंत्री
8. श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव – निर्देशक
9. डॉ0 अम्बुज श्रीवास्तव – संयुक्त निर्देशक
10. डॉ0 अजय कुमार श्रीवास्तव – सहायक निर्देशक
11. श्री ईश्वर चन्द्र श्रीवास्तव – संगीत निर्देशक
12. श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव – रंग–मंच प्रबन्धक
13. श्री सचेन्द्र नाथ सिन्हा 'राजू' – संयुक्त रंग–मंच प्रबन्धक
14. श्री राम चन्द्र श्रीवास्तव – सहायक रंग–मंच प्रबन्धक (विद्युत)
15. श्री अनुराग जी – सहायक प्रबन्धक (वेशभूषा)
16. श्री गौरव जी – सहायक प्रबन्धक (वेशभूषा)
17. श्री अजीत जी – सहायक प्रबन्धक (वेशभूषा)
18. श्री सौरभ जी – सहायक प्रबन्धक (वेशभूषा)
19. श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव – प्रभारी रूप सज्जा
20. श्री कुँवरलाल श्रीवास्तव – संयुक्त प्रभारी रूपसज्जा

सम्पादक मण्डल

श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
श्री कृष्ण कुमार सिन्हा
डा0 अम्बुज श्रीवास्तव
श्री श्याम जी सिन्हा
श्री पवन कुमार श्रीवास्तव